चौरस खेतक चौरस उपज

चौरस खेतक चौरस उपज

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

CHAURAS KHETAK CHAURAS UPAJ

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-28-6
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2019)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

कथा-क्रम:

-

लजगर लोक

जेठ मास, तीन बजे बेरुका समय। रूपोलाल आ सरूपोलाल अपन समयानुसार काज करए खेत दिस घरसँ निकैल चुकल छला।

दुनू गोरे दू परिवारक छैथ मुदा अपन जीवन क्रियाकेँ नियमित बनौने छैथ, जइ नियमानुसार तीन बजे बेरुपरहसँ सूर्यास्त धरि काज करै छैथ, तहिना छह बजे भिनसरु-पहरकेँ घरपर अपन सम्बन्धित काज सम्हारि निसचित समयपर खेतक काज करए सभ दिन विदा भऽ जाइ छैथ।

एक तँ जेठ मासक तीन बजे बेरुका रौद, तैपर हवा ठाढ़ भेने समयमे झड़कवाहि बेसी छल। घरसँ हटि आ बाधक बीच पोखैर-महारपर सइयो बर्खसँ ऊपरेक एकटा पीपरक गाछ अछि।

समयक झड़की देखि जहिना रूपलालक मन थकथका गेलैन तहिना सरूपलालक मन सेहो थकथकाएले छेलैन। ओना, दुनूक मनमे बिसवास बनले छैन जे रसे-रसे आब समयक झड़कवाहि[1] कमबे करत, मुदा तैयो मन तेना थकथका गेलैन जे महारपर देने रस्ताकातमे जे पीपरक गाछ अछि ओइठाम पहुँचला पछाइत आगू डेग बढ़बैक साहस मनमे नइ एलैन।

ओना, रूपलालो आ सरूपलालो–दुनू गोरे–दू परिवार रहने दू रस्तासँ पीपरक गाछ लग पहुँचल छला मुदा पहुँचला दुनू गोरे

[1] रौदक गरमीसँ हवा गर्म भेने

एक्केबेर। रूपलालकेँ देखिते सरूपलाल बजला- “भैया, समय बड़ उतकट अछि! एहेन समयमे लोक बिमार पड़िते अछि तँए कनीकाल अहीठाम बिलैम जाह। तैबीच तमाकुलो खा लेब आ जेते दिन खसैत जाएत तेते झड़कवाहियो कमिते जाएत।”

सरूपलालक बात सुनि रूपलालक मन सेहो मरियाए लगलैन। मरियाए ई लगलैन जे तमाकुल खाइमे केते समैये लागत। ओना, अपन जीवन आ जीवनक प्रति जे खेबाक समरपित विचार रूपलालक मनमे छेलैन ओइ विचारकेँ सक्कत बनौनहि छलाह जे जेते समय अनेरे बैस कऽ गप-सप्पमे लगाएब तेते समय काजक कटौती करबे करत। रहल बात समयक कुदरूपक अर्थात् उचित समयसँ समयकेँ विद्रूप हैबक, ओ तँ अछिए...। लगले रूपलालक मनमे ईहो उठलैन जे समयक कुदरूपपनाक डरसँ काज छोड़ि पड़ा जाएब सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। ओकरासँ मुकाबला करैक साहसो आ धीरो बना कऽ राखए पड़त। एक तँ समयक प्रतिकूलता, दोसर सरूपलालक आग्रह[2] सँ रूपलाल रूकि गेला। रूकिते मन सेहो गवाही देलकैन जे काजोक दौड़मे लोक अमलपान करिते छैथ, जेकर मिनहा काजक कटौतीमे थोड़े होइए, से हेबे किए करत, थाकल मन आ थकाएल देह-हाथकेँ जँ कनी आराम भेट जाइए तँ ओइमे नवशक्तिक संचार भइये जाइए किने जइसँ काजोमे कमी नहियेँ होइए। एकर माने ई नहि जे अमलेक बहानासँ समयकेँ नष्ट कए दिऐ आ अपन दोखकेँ मेटा ली, सेहो तँ उचित नहियेँ कहल जाएत।

धोतीक ढट्ठासँ दू-मुहाँ चुनौटी निकालि सरूपलाल एक मुहसँ तमाकुल आ दोसर मुहसँ चुन निकालि चुनबए लगला। जेना-जेना

---

[2] तमाकुल खाइक

सरूपलाल बामा तरहत्थीपर दहिना औंठासँ चुन मिललाहा तमाकुलपर रगड़ दिअ लगला आ ओइसँ जे निशाएल हवा पसरए लगल तइसँ दुनू गोरेक मनमे जेना-जेना नव-नव विचार जगए लगलैन तेना-तेना विचारमे सेहो जगरपना आबए लगलैन...। सरूपलाल बजला- "भैया, अपन एक गाम एक समाज रहितो बहुरूपिया जकाँ बनल अछि।"

अपन गामक चर्च सरूपलाल अपना मने केने छला मुदा से रूपलालकेँ सोहंतगर नइ लगलैन। बजला- "सरूप, कहलह तँ ठीके मुदा से अपने गामटा एहेन अछि आकि आनो-आनो गाम एहने अछि?"

जहिना गाम-समाजक लोक अपन गलतीकेँ दाबि अनकर ओहने गलतीकेँ गलती मानि चर्च करैए आ अपन गलतीकेँ मनेमे दाबि कऽ रखने रहैए, एहने खियालसँ रूपलाल बाजल छला। मुदा दोसर दिस सरूपलालक मनमे छेलैन जे अनकर गलतीक फल अनका भेटत, तइसँ हमरा की? हमरा तँ अपन गलतीक फल भेटत तँए अपनो गलती आ अपन समाजोक गलतीकेँ जेते बेसी उजागर करब तेते नीक हएत जइसँ गलती रूकत। जखने अपने आकि आनो समाजक जेते गलती रोकब ओते समाजमे उचित-सहीक आवाहन हएत जे शुभे नहि शुभदायिनी सेहो हेबे करत।

अपन बाड़ीक बिलेती तमाकुल सरूपलालकेँ रहबे करैन, मुँहमे पड़िते तेजाव जकाँ छनछना कऽ तँ नहि लगलैन आ ने भाँग जकाँ भेलैन जइसँ भुमहुरक-आगि सदृश रसायनी विचार अबैक सम्भावना रहैत बल्कि ब्राण्डी जकाँ भेलैन जे कण्ठसँ निच्चाँ उतैरते कुचकुचाइत कण्ठ मुँहक चुहचुहीकेँ जहिना बदलए लगैए तहिना दुनू गोरेक बदलए लगलैन।

एकटा बात बीचमे छुटि गेल, विलायती तमाकुल। अपना ऐठाम जेकरा छोटकी तमाकुल कहै छिऐ ओकरे विलायती सेहो कहल जाइए। जेकर खेती मिथिलांचलक गामे-गाम होइते छल आ होइतो अछिए। ओना, मिथिलांचलोक दछिनबरिया इलाका जेकरा 'सरेसा' कहै छिऐ जे समस्तीपुर होइत मुजफ्फरपुर, छपरा-चम्पारण तकमे बड़की तमाकुलक खेती होइते आबि रहल अछि। मुदा बड़कियोमे बड़की आ छोटकियोमे छोटकी नइ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। बड़की भेल जे बड़की किस्मक एक गाछमे तीन-सँ-चारि पात खाइ-जोकर भेल बाँकी निच्चाँ-ऊपरक भाग बीड़ी-चिलममे पीबै-जोकर भेल। तँए, ओहन बड़की किस्मक तमाकुल नहियेँ अछि जइमे दस-बारह पात खाइ-जोकर नइ होइए, सेहो होइते अछि। तहिना छोटकी–विलायती–मे सेहो छोटकियो होइए आ छोटकीमे मोटकी सेहो होइते अछि। छोटकी भेल जेकर तीन-चारि पात खाइ-जोकर भेल आ बाँकी पीबै-जोकर। तैकाल तमाकुलो पंचागम भइये जाइए, माने सिर-सँ-सिरवाहि धरि उपयोगी अछिए। भलेँ उन्टा हुअ आकि सुनटा। छोटकीमे मोटकी भेल धरमपुर इलाकाक तमाकुल। जे सभ आकारमे छोटकियेक रूप-रेखाक होइए मुदा ओकर दस-बारह पात खाइ-जोकर होइए। खाएर जाने तमाकुल खेनिहार, पीनिहार आ उपजौनिहार अनेरे ऐसँ रूपलाले आकि सरूपलालेकेँ कोन मतलब। मतलब एतबे जे अनके उपजौल तमाकुलो आ चुनो खाइ छी हम अहाँ। जहिना अन्हारमे इजोत जकाँ परिचय दइ छी तहिना तमाकुलो मुँहमे लइते अपन-अपन परिचय देलकैन। सरूपलाल बजला- "भैया, सदिकाल अधलेक चर्च करब तखन भगवानक नाम लेब छुटि जाएत, से नहि तँ तूँ हमरासँ बेसी सीयनगर छह तँए पुछै छिअ।"

दुनियाँमे पूछ भेने हनुमानजीक मन जहिना खुशी होइए

तहिना रूपलालोकेँ भेलैन। नइ दुनियाँ पुछलक ते नइ पुछह, मुदा एक्कोटा पुछनिहार जँ भऽ जेता तँ हाथीक नाँगैर भलेँ नइ हुअ मुदा बकरियोक पूछ जकाँ नइ हएत सेहो तँ नहियेँ अछि...।

हलैस कऽ रूपलाल बजला- “बौआ! आब कि भाए-भैयारी रहल, सत् बात बाजू ते लोक खौंझाएत, नइ बाजू ते घटिया घाटपर बैसल रहू।”

रूपलालक मन जेना विचारक दुनियाँमे रमकए लगल छेलैन। जे सरूपलालक जगल ब्रह्मजोत[3] जगा देलकैन। बजला- “भाय साहैब! निजैतगर लोकक तँ गामे छी, मुदा जखन गाम गामे छी तखन लजैतगर लोक तँ सेहो हेबे करता किने?”

जहिना कोनो-कोनो लोककेँ ठोरेपर बरी बैसल रहैए तेना तँ नहि मुदा जेना धारक नव धाराकेँ जगने जेहेन चिन्तनधारा जगैए तहिना रूपलालक जगि गेल छेलैन। बजला- “बौआ, दुनियाँक कोनो क्षेत्र किए ने हुअए मुदा सभठाम दुनू तरहक लोक रहिते अछि ओही बीच ने लजैतगर लोकक सृजन सेहो होइते अछि।”

अवोध सरूपलाल रूपलालक वाक सुनिते अवाक होइत बजला- “भाय साहैब, लोकक सृजन होइ छै आकि जनम?”

हाइ रे बा! रूपलाल सरूपलालक प्रश्न सुनि ठहाका मारि हँसए लगला...।

देखि-सुनि रूपलालो ओहिना हँसए लगला जहिना माए-बापक हँसैत मुँह देखि छोट बच्चा सेहो हँसए लगैए।

❑ शब्द संख्या : 1003, तिथि : 29 मार्च 2019

[3] बरहम इजोत

खरिहाँन उपैट गेल

नअ बजे, दुपहर-भोरक बीचक समय। रविनाथ विद्यालयक बाटपर चढ़िये रहल छल कि आगूए-सँ माए बजली-

"बौआ! बुड़हाक मन खसल देखै छिऐन, से कने पुछि लहुन जे किछु भेलैन अछि?"

मिडिल स्कूलक विद्यार्थी रविनाथ, किए बुझत जे मन खसल केकरा कहल जाइए। ओ तँ ओतबे बुझलक जे कोनो तरहक परेशानी भेल हेतैन तँए मन ठमकल-ठेहियाएल हेतैन। ठेहियाएलोक माने अपन-अपन अछिए। कियो काजसँ ठेहिआइ-ए तँ कियो चालिसँ, कियो गुमानसँ ठेहियाइ-ए तँ कियो सुमानसँ। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहह। रविनाथकेँ ओइसभसँ कोन मतलब। मतलब एतबे जे विद्यालयक बाट चढ़लकेँ आगूए-सँ जे माए कहलकैन तइ सम्बन्धसँ, माने माइयक ससुर आ पिताक पितासँ...। ऐठाम ससुरक माने ई नइ बुझब जे ससुरबे तोहर दालक छोड़ेबह। ऐठाम ई माने अछि जे पैंसैठ बर्खक प्रकाशनाथ अपन जिनगीक अतीतमे डुमि अपन जीवन देखि रहल छला। तँए मुँहक ऊपरका सूरतमे मलपन पसैर गेल छेलैन जइसँ खसल सन बुझि पड़ि रहल छेलैन।

विद्यालय दिस रविनाथक डेग उठि चुकल छल जइसँ आजुक अध्ययनक विषयमे मन प्रवेश कऽ रहल छेलै मुदा माइयक मुँहक बात रविनाथक मुँहक मुँहठीपर छेलैहिये, अपन बाबा–प्रकाशनाथ–

केँ पुछैत बाजल- “बाबा?”

अपन-अपन प्रश्नक भावो जहिना सभकेँ अपनो-अपनो होइए आ मिश्रितो होइते अछि तहिना भावक भावनो आ भावार्थोमे केतौ-केतौ अन्तरो होइए आ केतौ-केतौ मिश्रणो तँ होइते अछि, तहिना रविनाथक विचार ‘बाबा’ सुनि प्रकाशनाथक मनमे भेलैन जे भरिसक बालवोध विद्यालय जाइक अपन हजिरनामा दैत जा रहल अछि। तँए की कहिऐ..! कियो तँ केकरो तखने ने किछु कहैए जखन ओकरा किछु करैत नहि देखैए वा जे करैत देखैए तइसँ भरिगर वा धड़फड़ीक होइ। ऐठाम तँ से सभ किछु ने अछि। समतल भूमि, समतल विचार अछि तँए प्रकाशनाथ किछु ने बजला।

माइक विचारकेँ रविनाथ संवाहक जकाँ समदिया मात्र बुझलक, तँए समादे जकाँ बाजि विद्यालय दिस बढ़ि गेल।

ओना, प्रकाशनाथ अपन जिनगीक अतीतमे बेथित भेल अपन ओ क्रियमान जिनगी देखि रहल छला जे मधुरस पानो आ उपारजनो करै छला जइसँ अपन जोग-भोगक संग परिवारो आ समाजोकेँ जोगबै-भोगबै छेलाहे। मुदा जिनगीक अन्तिम पड़ाव, जे समआसक (संयासक) होइए। तइ अवस्थामे प्रकाशनाथ पहुँच गेल छैथ। ई तँ दुनियाँ छी, भलेँ दुनियाँक खुदरे-खाइन धरती किए ने हुअए मुदा छी तँ दुनियेँक अंग। दुनियाँक धरतीपर अनेको देशो दुनियाँ अछिए। दुनियाँ जहिना माटि-पानि, बोन-झाड़, धार-समुद्र, पाथर-पहाड़सँ बनल अछि तहिना ने देशोक दुनियाँ अछिए। जहिना देश-दुनियाँ अछि तहिना ने सभकेँ अपन-अपन बस-बासो आ चस-चासो तँ अछिए। जखने बस-बास आ चस-चास सबहक अपन-अपन रहत तखने जिनगीक बलपनसँ गुजरैत वृद्धपन धरि पहुँचबे करत। माने चारिम अवस्था, सन्यासक अवस्था हेबे करत। जखने

सभठाम एहने अछि तखन सन्यासपनो ने सभठाम सभ रंग हेबे करत। सन्यासक माने एतबे तँ नइ ने भेल जे बिना सीमा-सरहद बुझनहि ऐ देशसँ ओइ देश गेलौं आ अपराधी बनि पकड़ा कऽ जहल चल गेलौं। सभ रंगक देशो आ दुनियोंमे सभ रंगक चारिमपनक जिनगियो अछिए। जखने सभ देशो आ दुनियोंमे सभ रंगक जिनगी रहत तखने सभ रंगक चासो-बास तँ रहबे करत। अही चास-बासमे ने केतौ एहेन संयस्त सेहो छथिए जे अपन लगौल जिनगीक फुलवाड़ीमे बास कए रहला अछि। अपन चास-बासमे सनियसपनक जिनगी-धारणा धारण केने छैथ आ किनको चासे-बास बदैल जेतैन जइसँ वीणाक सूर मिलबैकाल कमारक घन[4]क आवाज ठाँहि-दे कानमे पसि जाइन तहिना ने हएत। खाएर जे हएत ओ सन्यस्त आ सन्यासी सभ बुझता। कियो अपन मनेमे सातो ऋृषि, सातो समुद्र आ सातो भुवन देखता तँ कियो बोनैया हाथी जकाँ अपन पालल-पोसल हथियाएल हाथी सन देह धरेनौं रहता तैयो लोक बोनैये कहतैन। ओना, तइले किनको दुखो हेतैन आ किनको सुखो तँ हेबे करतैन। माने ई जे जे दुनियासँ मोह रखता हुनका दुख हेतैन आ जे दुनियासँ मोहे ने रखता हुनका तँ सुखे-सुख ने छैन। मुदा से नहि प्रकाशनाथक अतीतक सुख आ वीर्तमान-भविसक मन खसैक कारण दोसर छैन। दोसर ई छैन जे अपन मनसँ लऽ कऽ हाथ तक कामै भऽ गेल छैन जइसँ मनमे छटपटाहट आबि गेल छैन तँए मन खसल सन बुझि पड़ि रहल छैन।

रविनाथ विद्यालय दिस बढ़ि गेल। तैबीच सिनेही–रविनाथक माए आ प्रकाशनाथक पुतोहु–क मनक छटपटाहट बढ़ि गेलैन। प्रकाशनाथक खसल मन देखि अपन सिनेहिल सिनेहसँ सिनेही

---

[4] भारी हथौरी

लगमे आबि बजली- "किछु भेलैन अछि?"

ओना, पुतोहुक पुछबकेँ प्रकाशनाथ समतलक विचार बुझलैन तँए मनमे कोनो तरहक उद्वेग वा लहैर जकाँ नइ भेलैन।

पुतोहुक प्रश्नमे पुछरी जोड़ि प्रकाशनाथ बजला-

"भेल कहाँ किछु अछि, भेलहे बहुत अछि।"

ओना, अपना जनैत अलंकार शैलीमे प्रकाशनाथ नमहर विचार रखलैन मुदा जहिना शास्त्र-पुराणक कथा-पीहानीकेँ लोक पीहानी-कथा बुझि शास्त्रे-पुराणमे चौपेत कऽ रखि बजैए तहिना सिनेही अपन ससुरक विचारक समर्थनमे मुड़ी डोलबैत बजली-

"से तँ छैन्हे।"

पुतोहुक विचारक समर्थन सुनि प्रकाशनाथ क्षुब्ध होइत बजला-

"एतेटा जिनगी समटाकऽ एकमुट्ठीक भऽ गेल अछि तँए सुमारक हएब सोभाविक अछिए। मुदा से के बुझत आ केकरा कहबै!"

अपन मनक विचारक धरातलपर सँ प्रकाशनाथ बाजल छला मुदा सिनेही सामाजिक धरातलपर ठाढ़ छैथ, किए तँ नारी शिक्षाक जे रूप अपना सबहक अछि ओ एहेन रहल जे सामाजिक वा पारिवारिक रूपमे जे किछु हाँसिल भेल, बस ओतबे। किताबी विचार मौखिक रहल जे अपन मन-मर्जीक अनुकूल रहल, तैठाम प्रश्न उठिये जाइए जे ऊपर चढ़ैत जिनगीक दशा-दिशा आ निच्चाँ खसैत जिनगीक दशा-दिशामे विपरीतपन आबिये जाइए भलेँ ओ देखै-सुनै आ बुझैमे एकरंगाहे किए ने बुझि पड़ए। एहेन खेल तँ दुनियाँक खेल छी। दुनियाँ माने संसार, जेकरा देखै छिऐ। विषुवत रेखा जीरो डिग्री अक्षांसपर बसल अछि। अपना गतिये सूर्य टहलै

छैथ। जइसँ विषुवत रेखाक दुनू भागक मौसमो आ मौसमक गुण-धर्म सेहो विपरीत समयमे एक्के रंगक गुण-धर्म पसारैए। देखल दुनियाँक खेल मनक दुनियाँक मनेमे नुका रहैए आ अपन जिनगीकेँ जे जइ रूपमे जीबैए, नीक बुझि ओहो दुनियासँ हार-जीतक लाज-लेहाज उठा चैनसँ जीबए चाहिते अछि।

अपना मने प्रकाशनाथ मने-मन वने-वन यात्रा कए रहल छला मुदा सिनेही अपन बने-मने बुझियो रहल छेली आ विचारितो तँ छेलीहे। तँए मनक विचार कहलकैन जे वृद्धपनमे–माने जिनगीक चारिम अवस्थामे–अहिना सबहक मन भङ्गैठ जाइ छै जइसँ बजै-भुकैक रूपे बदैल जाइए। सएह भेलैन अछि। बजली- “अखन दुनू परानी–बेटा-पुतोहु–खुट्टा जकाँ आगूमे ठाढ़ छिऐन तखन हिनका..?”

ओना, समाजक बीच जे विचार चलि रहल अछि तइ अनुकूल सिनेहीक विचार छेलैन, मुदा प्रकाशनाथक विचार अपन बनौल जिनगीक चारिमपनक छैन, जे सभकथूसँ जिनगीकेँ सम्पन्न बनबैए। पुतोहुक मुहसँ सुनल ‘खुट्टा जकाँ’ विचारसँ प्रकाशनाथक मन बिदैक गेलैन, बजला- “जखन अपन खुट्टे उखैड़ गेल तखन अपन खरिहाँने की बँचल।”

जहिना सभ कियो बुझै छी जे दरबज्जापर खुट्टा ताबते धरि गड़ल रहैए जाबत धरि खुटबाह ओकर खुटबाहि करैए। मुदा प्रकाशनाथक पैंसैठ बर्खक पैछला जिनगी एक सम्पन्न किसानक बितलैन। ऐठाम सम्पन्नक माने ई नहि जे जिनका बेसी जमीन छैन, ऐठाम एतबे जे जिनका अपन मनोनुकूल खेती करै-जोकर छैन।

प्रकाशनाथकेँ सहए छेलैन। बारहो विरहीनी उपजबै छला। बारहो विरहीनी भेल अनेको रंगक अन्नक खेती, अनेको रंगक

तीमन-तरकारी, मर-मसल्ला, फल-फलहरीक खेती। जइसँ सालो भरि खरिहाँन लगल रहै छेलैन से मेटा गेलैन। किए तँ तीनटा बेटा प्रकाशनाथकेँ छैन, तीनू परदेशमे नोकरी करै छैन। सभसँ छोट माने तेसर बेटा पटनामे छथिन, हुनके डेराक ओसारक कुरसीपर बैस प्रकाशनाथ अपन जिनगीक सुमेरु पर्वतपर घुमि रहल छला। आगूमे पुतोहुकेँ ठाढ़ भेल देखि प्रकाशनाथ बजला-

"चाह पीबैक मन होइए।"

ओना, प्रकाशनाथक मनमे चाहक चाह जेते नइ छेलैन तइसँ बेसी 'जोगीक कुत्ता जकाँ' बलाए हटेबाक रहैन। तँए, चाहक बहाना बना पुतोहुकेँ लगसँ हटौलैन।

पुतोहुकेँ लगसँ हटिते प्रकाशनाथक मन अपन बीतल लोकमे फेर पहुँच गेलैन। मनमे सुमार उठलैन जे जिनगी भरि जिनका सभसँ हेम-क्षेम छल, सभ हेरा गेल आ ओइठाम आइ जीबैले मजबूर छी जैठाम सभ किछु हेराएल-हेराएल सन अछि। जहिना हम अपने किनको नइ चिन्है-जनै छिऐन तहिना ने ओहो सभ छैथ। जइ जिनगीमे हँसैत-खेलैत एते नमहर यात्रा केलौं ओ आइ जीवनक भार बनि गेल अछि। ओना, हेराएबो दू रंगक होइत। एक होइत दुनियाँमे हेराएब आ दोसर होइत दुनियाँसँ हेराएब।

सिनेही चाह नेने पहुँचली। हाथमे चाहक गिलास उठा चाहक घोंटक संग अपनो चाह प्रकाशनाथ घोंटिये रहल छला कि कण्ठ फुटि बजलैन-

"खरिहाँन उपैट गेल..!"

❑ शब्द संख्या : 1218, तिथि : 02 अप्रैल 2019

पगलपन

सतपुरा गाममे जीवन कक्काक परिवार छैन। ओना, गाम गामे छी तँए जीवन कक्काक परिवार सन केतेको परिवारो अछिए। मुदा किछु मानेमे जीवन कक्काक अपन अलग पहचान छैन। ओ छैन जे बच्चेसँ जीवन कक्काक आचारो-विचार आ विचारोक बेवहारमे आन-आनसँ किछु हटलो आ किछु सटलो रहबे केलैन। जइसँ कियो जीवन काकाकेँ संस्कारियो कहै छैन आ कियो कुसंस्कारी नइ कहै छैन सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए।

मानवलालक एक मात्र सन्तान जीवन काका तँए बाबाक किछु विशेष धियान बेटापर छेलैन्हे जेकर फलाफल भेलैन जीवन काका सन बेटा। तँए ई कहब जे सभ जीवने काका जकाँ गाममे छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। अपना जनैत माने जेते अपना लूरि-बुधि छैन, जे एक जिनगीक अनुभव भेल, सभ लूरि-बुधि मानव बाबा जीवन काकाकेँ स्कूल छोड़ला पछाइत सिखाइयो देलखिन आ कहियो[5] देलखिन। तेकर कारण मानव बाबाक मानब छेलैन जे अपन ठाढ़ जिनगीक अनुभव जखन सन्तानमे चलि औत तखन पिताक ॠृणे कोन बाँकी रहत जे बेटाक शेष रहत। सभ बुझिते छिऐ जे जीरो डिग्रीक बैलेंसे ने जीवन दर्शन छी। माने संसारक संग परिवारो समाजक ने किछु लेनी अछि आ ने देनी।

मानवे बाबा जकाँ जीवन कक्काक जीवन सोल्होअना सिखा-

---

[5] सुनाइयो

उतार भइये गेलैन। अपन पैत्रिक विचार-बेवहारकेँ जीवन काका अपना जिनगीमे ओहिना ढाड़लैन जेना पुरीक साँचामे पुरीक रंग-रूप-आकार तैयार होइए। बच्चेसँ जीवन काका अपन जीवनदायिनी दायित्वकेँ बुझलैन। बुझबो केना ने करितैथ, जहिना छबे-छबे खेत बढ़ैए तहिना ने करे-करे पेटो बढ़िते अछि। जीवनो ने तहिना होइए। जँ चढ़ाइ दिस बढ़ल तँ चढ़त आ जँ उतार दिस बढ़त तँ उतरबे करत...। बालपनसँ श्रमशील जीवन अपन छबे-छबे अप्पन श्रमकेँ बढ़बैत ओहन शिखर जकाँ ठाढ़ भऽ जाइए जैपर–जहिना एभरेस्टक शिखरपर चढ़ि ठाढ़ भऽ कियो अपन झण्डा लहरा अबै छैथ। मुदा शिखरपर चढ़ल उम्रक संग जखन जीवन निच्चाँ उतरए लगैए तखन जहिना चढ़ैत बेरिया[6] होइए तहिना ने उतरैत बेरिया सेहो होइते अछि। मुदा दुनियाँ छी, अन्हेरो अही दुनियाँमे होइए जइसँ अन्हराएलो लोकक बास अछिए, तँए अनभुआरक बास नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाएत, सेहो अछिए। जखने अन भू भऽ जीवन तैयार करैमे श्रम जुटि जाइए तखन श्रमशील जीवन एबे करैए। खाएर, जे अबैए आकि जाइए तइसँ जीवन काकाकेँ कोन मतलब छैन; मतलब छैन अपना भरि। अपना भरिक माने भेल अपना लगसँ लऽ कऽ दुनियाँक ओर-छोरक सीमा धरि।

जीवन काकाकेँ दू सन्तान। दुनू बेटे। बच्चेसँ दुनूकेँ परिवारक संस्कार भेटल, जइसँ दुनूक अपन मनक सेन्स सेहो जगि कऽ अपन जीवन लपैक कऽ पकैड़ लेलकै। दू सालक दुनूक बीच आयुक अन्तर। जेठ बेटा चन्द्रनाथ आ छोट तारानन।

जीवन काका अपन परिवारक कारोबारमे तेना ओझराएल रहै छला जे परिवारो आ परिवारक धियो-पुताक सुधि-बुधि बिसैर जाइ

[6] बेर, काल

छला। तँए दुनू बच्चाक सोल्होअना भार पत्नीकेँ सुमझा देने छेलखिन। एक तँ ओहुना बच्चाक सिनेह माएकेँ बेसी होइते छैन, मुदा एकर माने ईहो नहि जे पिता जे दिन-राति रोडपर वौआइ छैथ से अनका-ले, तैसंग अपन भारो तँ छैन्हे। तखन तँ भेल अपन-अपन दायित्व। भानस-भात–जीवनक प्रमुख आवश्यकता–छीहे जे भार अदौसँ नारियेक जिम्मा रहबो कएले अछि, तइ खियालसँ। आरो काज बच्चाक अपन-अपन होइए, बँचल पढ़ै-लिखैक खर्च, से जीवन काका पत्नीक हाथमे ओते दइये देने छथिन जे जेकर अभाव नइ होइ। संगे पत्नीकेँ ईहो कहि देने छथिन- "चन्द्रनाथे आकि ताराननें जखन जे माँगे तइमे नइ नै कहबै।"

पहाड़ी बहादुर दरमान जकाँ कहियौ आकि लोहाक रोबोट जकाँ, जेते ओइमे फीट कऽ देलिऐ वा कहि देलिऐ बस तेतबे। तहिना महिला जगतक सेहो अछिए। महिलो छथिये। जेतबे पतिक आदेश भेल बस तेतबे ओ करती। ऐठाम ई नइ बुझब जे ओ सभ परिवारकेँ परिवार जकाँ नइ बुझै छैथ। पतिक विचारकेँ शिरोधार्य करैत मुड़ी डोला कऽ सुधिया काकी भार उठा बाजल छेली- "बड़बढ़ियाँ।"

समय बीतैत गेल। हाइ स्कूलमे दुनू भाँइ- चन्द्रनाथो आ ताराननो पहुँच गेल। चढ़न्त उमेर दुनू भाँइक छेलैहे तँए अपन-अपन मने अपन-अपन जिनगीक साँचा तैयार करए लगल। चन्द्रनाथ क्लासमे प्रथम स्थान आ तारानन सामान्य स्तरक स्थानपर रहैत छल। एकर माने ई नहि जे तारानन भुसकौल छल आ चन्द्रनाथ बड़ तेज छल। जहिना अपना दिशामे चन्द्रनाथ तेज छल तहिना आनक दिशामे भुसकौलो छेलैहे। तहिना ताराननो पढ़ै-लिखैमे कनी भुसकौलौ छल तँ खाइ-पीबै, देखै-सुनै, गप-सप्प करैमे कनी बेसी तेजो तँ छेलैहे। बस! यएह तँ छी जीवन, एकरे

जोड़-घटाउ एक रंग करैत चली...।

हाइ स्कूलक शिक्षक रूद्रदेवक प्रभाव चन्द्रनाथपर विशेष रूपसँ पड़ल छल। चन्द्रनाथ जखन हाइ स्कूलमे प्रवेशे केने छल, तारानन मिडिले स्कूलमे छल, कि रूद्रदेव बाबूसँ परिचय भेने चन्द्रनाथक सम्बन्ध-सूत्र बढ़ैत गेल। रूद्रदेव बाबू बच्चेसँ पढ़ैमे नीक छला, जइसँ पढ़ाइ-लिखाइ दिस झुकान भेने दुनियाँक आन-आन दिशा मेटाइत गेलैन। अपना ऐठाम आइये नहि सभ दिनसँ गजपट बिआहक चलैन चलिये आबि रहल अछि। अखन धोखेसँ बुझू रूद्रदेव बाबू हाइ-स्कूलक शिक्षक भेला आ पत्नी डॉक्टर भेलखिन। विचार-भेद भेने पत्नी रूद्रदेव बाबूकेँ छोड़ि दोसर बिआह अपना विचारे कऽ लेलैन। छअ-पाँचसँ हटल रहैबला रूद्रदेव बाबू अपने-आप परिवार बनि असगरोक परिवार बना चलए-बला लोक।

पहिल दिनक भेँट दुनूक बीचक संयोगो कहल जा सकैए। ओना, सतपुरा आ कर्मपुरा एक-बधुए गाम छी जइसँ हाट-बजारसँ लऽ कऽ आनो-आनो गाम जाइ-अबैबला रस्ता एक्के अछिए। एक्के स्थानपर, माने चन्द्रनाथ पढ़ैले आ रूद्रदेव बाबू पढ़बैले जा रहल छला। विद्यार्थीक रूप चन्द्रनाथक आ शिक्षकक रूप अपन देखि रूद्रदेव बाबू चन्द्रनाथकेँ पुछलखिन-

“बौआ, केतए पढ़ै छह?”

चन्द्रनाथ कहलकैन-

“शिव-पार्वती विद्यालयमे।”

असगर पारिवारिक जिनगी बना जीनिहारकेँ लोकक खगता हएब सोभाविके अछि। जाबे से नहि हएत ताबे प्रेमक प्रकाश प्रकाशित केना हएत। दुनू गोरे एक्के स्कूल जाइतो रहबै करैथ, मुदा दुनू दू काज। ओना, दुनूक काजक मुँहमिलानीक जगह विद्यालयमे

विद्याक लेन-देन सेहो होइते अछि। चुपचाप रूद्रदेव बाबू चन्द्रनाथकेँ मने-मन पढ़ि रहल छला। चन्द्रनाथक मनक मोनिये केतेक नमहर अछि, मात्र दू मास पहिने हाइ स्कूलक आठमा क्लासमे नाओं लिखौलक अछि। विद्यालयक मुँह लग पहुँचते, जैठाम आनो-आन विद्यार्थी सभ छल, चन्द्रनाथ बाजल-

"प्रणाम गुरुदेव..!"

'गुरुदेव' सुनि रूद्रदेव बाबूक मनमे ओहन विर्ड़ो जकाँ उठि गेलैन, जेहेन तूफानी विर्ड़ो चकभौर लइए। मुदा जहिना तूफानक घड़ी लोक अपन मनकेँ शान्त रखैए तहिना रूद्रदेव बाबू असथिरसँ असिरवाद दैत बजला-

"बौआ, जहिना संगे-संग एलौं तहिना जेबोकाल चलब आ आनो दिन जाएब-आएब।"

जहिना रूद्रदेव बाबूकेँ बालसखा भेटलैन तहिना चन्द्रनाथकेँ सेहो गुरुशिखा भेटबे कएल। नीक संजोग बनल।

हाइ स्कूलसँ निकलला पछाइत चन्द्रनाथक आत्मबल एते सक्कत भऽ गेलै जे अपन जिनगीकेँ अपना मुट्ठीमे रखि चलए लगल। दू सालक पछाइत तारानन्नो हाइ स्कूलसँ निकलल। समय बीतैत गेल।

गामक लोक दुनू भाँइ–चन्द्रनाथोकेँ आ तारानन्नो–केँ कियो 'पागल', तँ कियो 'बताह', तँ कियो 'भंगबताह', तँ कियो 'मतिछिन्नू'क संग 'बुड़िवानो' कहिते अछि। मुदा दुनू-ले धैनसन।

पारदर्शी ऐना जकाँ चन्द्रनाथ बुझि रहला अछि जे समाजक जिनगीक जे स्तर अछि आ ओइ बीच जे अपन स्तर अछि, विचार क्षेत्र जखन पसैर कऽ कर्मक्षेत्र दिश बढ़ैए तखन बीचमे सीमानुमा मेड़ बनने अपन क्षेत्र सेहो बनिते अछि। एहने परिस्थितिमे विचारक

परीक्षाक घड़ीक आगमनो होइते छै जैबीच अपन परिछन करैत कियो आगू डेग बढ़बैत अगुआ-अगुआ अगुआइत जीवनधार टपि जीवन पबैए।

तँए कि तारानन‍कैँ समाजक मोह नइ छइ। जहिना परिवारक स्तर उठबै पाछू, विचार नहि रहल अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। ओकरो मनमे सदिकाल एहेन चिन्ता नचिते रहै छै जे केना नीक-सँ-नीक भोजन, नीक-सँ-नीक कपड़ा आ नीक घर रहत। भलेँ ओकरा भोग-पालक कहि 'पागल' कहियौ आकि चन्द्रनाथकैँ जोग-पालक कहि 'पागल' कहियौ।

❑ शब्द संख्या : 1113, तिथि : 04 अप्रैल 2019

छलाननक सराध

खेतसँ काज करिकऽ गिरिधारीलाल दरबज्जापर पहुँचबे केलाह कि पत्नी कहलकैन-

“छलाननक ऐठामसँ नौत आएल अछि।”

एगारहसँ ऊपर समय भऽ गेल छल। नहाइ-बेर उनैहियो गेल छल आ किछु बाँकियो छेलैहे। नहाइ बेर उनहैक माने भेल जइ समयमे नहाइ छी ओइसँ बिलम हएब। मुदा से बन्हुआ लोककेँ होइए, अपना सभ तँ सहजे सर्वोदयी विचारक छी तँए नहाइक कोनो बेरे ने अछि, तहूमे कलकारखानाक भाय लोकैन बारह बजे दिनक कोन बात जे बारह बजे रातियोमे झोलियाएल-करियाएल देहकेँ कपड़ाबला साबुनसँ साफ करैत नहेबे करै छैथ। ओना, गिरिधारीलालक अपन रूटिंग छैन जइसँ ओ एगारह-साढ़े-एगारह बजेमे सभ दिन नहाइ छैथ, तँए नहाइक बेर उनहबो करै छेलैन आ नहियोँ उनहै छेलैन। गिरिधारीलालक रूटिंग समयक हिसाबसँ नहि, काजक हिसाबसँ चलै छैन। ओना, काजक असीम रूपक बीच अपन सीमा निर्धारित समैयेक अन्दाजसँ गिरिधारीलाल करै छैथ, मुदा कहियोकाल तइमे विघ्न-बाधा भेने कनी आगू-पाछू भइये जाइ छैन।

पत्नीक विचार सुनि गिरिधारीलालक मनमे हथौरीक चोट जकाँ ठाँहि-दे लगलैन। ठाँहि-दे लगैक कारण भेलैन जे अपना ऐठाम खेबाक ओरियान नइ भेल। तहूमे जखन पत्नियेँक

जानकारीमे छैन तखन तँ ओ निसचिते ने अपना-ले रान्हि पाइब चुकले हेती...। लगले मनमे भेलैन जे कहू तँ ई केहेन भेल जे कोढ़ तोड़ि भिनसरसँ खटि एलौं हेन आ खाइबेर ओहन लोकक चर्चा केलैन जेकर अन्न खाएब एकादशीक अन्न खेनाइ हएत...।

अपन विचारमे डुमल गिरिधारीलाल पत्नीक दोख ताकए लगला जे भूखल-मियादि ओना थोड़े शान्त हएत जाबे सौनक मेघ जकाँ बरिस नहि लेब। पहिल प्रश्न मनमे उठलैन जे पत्नी नौत किए मानली, जखन कि हम ओहन लोकक सराधक भोज खाएबकेँ पाप बुझै छी। मुदा लगले दोसर मन प्रश्नकेँ रोकैत विचार देलकैन जे एहेन विचार अपना मनक ने उपज छी। पत्नीकेँ तँ कहियो एहेन विचार मनमे जगेबे ने केलिऐन जे ओ बुझि कऽ विचाराधीन प्रश्न बनैबतैथ..!

एक तँ थकथकाएल मन तैपर हारल सन अपनाकेँ गिरिधारीलाल बुझि बरिसैक विचार मनेमे दाबि बजला- “केहेन[7] नौत आएल अछि?”

अपना सबहक बीच नौतक विषद रूप अछि, जेना भरदुतियामे भाए-बहीनिक बीच नौत चलैए, सरकार बनबैक नौत पड़ैए, गाम-घरमे भाँग पीबैक नौत सेहो फगुआमे देले जाइए इत्यादि-इत्यादि...।

गिरिधारीलालक मुहसँ ‘केहेन नौत’ खसबे केलैन कि पत्नी लपकमुहेँ उत्तर देलखिन- “छलाननक सराधक भोज छिऐन जे नौत दइले हुनकर पोता- कृत्यानन आएल छल।”

जहिना मोटर साइकिल वा कोनो इंजिनगाड़ीक यात्री ओतै ओहन अँटकान अँटकैए जेतए नमगर-चौड़गर कटारि वा बिनु

[7] कोन तरहक

नाहक धार बहैत रहल तहिना गिरिधारीलालक मनमे भेलैन। एक तँ सराधक भोज, सेहो अबिसवासू! माने श्रद्धाक जगह अश्रद्धा..! अर्थात् ओहन लोकक सराधक भोज जे पुस्तैनी समाजक गरदैन कटैत आबि रहल अछि...।

हारल-थाकल बटोही जकाँ गिरिधारीलाल बजला-

"जखन घरवारी नौत दिअ आएल छल तखन कनी हमरो आशा करितौं से नहि?"

पतिक विचारकेँ, जहिना झटकनसँ धानक सिल्ली परहक खखरीक संग खढ़ो-पात उड़ौल जाइए तहिना सुकुमारी उड़बैत बजली-

"कोनो कि एक्के दिनक आकि एक्के घरक बात छी। अहिना समाजमे रंग-रंगक काज-उदेम होइए, भोज होइए, नौत पड़ैए। अँगना-घरमे रहै छी हम आ नौत अहाँकेँ दइले बोने-झाड़े लोक वौआएल घुमत।"

सामान्य रूपेँ पत्नीक विचारमे गिरिधारीलालकेँ केतौ खढ़-पात नइ भेटलैन जे झटकनसँ झटकिऐबतैथ। ओना, मन दोगे-सान्हिये, बोने-झाड़े गर तकैले औनाइते रहैन, मुदा कोनो तेहेन गर सुझबे ने केलैन...।

हारल सन अपनाकेँ गिरिधारीलाल ओहन बुझए लगला जेहेन अन्हारमे घोर-अन्हार कहियौ आकि भादवक अमाबसियामे बदरीहन मेघ उतरने जहिना करिया जाइए तेना कहियौ। एक दिस गिरिधारीलाल पत्नीक वियोग देखि रहल छला आ दोसर दिस अपनो विचारक वियोग रहबे करैन। जइसँ मनक विषम स्थिति मनेमे बनि रहल छेलैन। लगले तामसे गिरिधारीलालक मन तल-विचल भऽ जानि तँ लगले अपना संग पत्नियों आ समाजोकेँ देखए लगैथ।

जखन अपनापर नजैर पड़ैन तँ देखैथ जे जखन अपने बुझि रहल छी जे ओहन-ओहन[8] लोकक सराधक भोज खाएब अनुचित छी, मुदा 'अनुचित' छी आकि 'उचित' छी ई जँ अपन मन–शास्त्रीय अध्ययनोक हिसाबसँ आ सामाजिक समरूपोक हिसाबसँ– मानि रहल अछि मुदा तेकरा तँ सामाजिक रूप भेटिये ने सकल अछि। सामाजिक रूप भेल जे एहेन-एहेन वृत्तिकेँ–माने केकरो किछु ठकब, केकरो किछु फुसि बात कहि फुसियाएब इत्यादिकेँ– समाजक बीच रखि ओकरा-ले दण्डात्मक निर्णय लेबा चाही, से तँ कहियो ने भेल। आइ समाजक सभ भोज खाइले मुँह बेबे करता, हम नइ जाएब, तखन समाजक बीच दोखी हएब कि नहि..!

अपनापर सँ मन छिछैलते गिरिधारीलालक पत्नीपर पड़लैन कि आरो मन लोहैछ गेलैन। लोहछलैन ई जे जखन हुनका नौत दिअ एलैन, तखन जँ हमरो कान तक खबैर करितैथ तँ किछु-सँ-किछु बहाना तँ बनाइये सकै छेलौं। नइ किछु तँ एते कहिये सकै छेलिऐ जे तीन दिनसँ ओहन सूल[9] भऽ गेल अछि जे भरि दिनमे तीस-चालीस बेर पैखाना जाइ छी, तँए हम अपनाकेँ अक्षम बुझै छी जे जेतेकालमे अहाँक भोजक प्रक्रिया चलत तेकर अदहो धरि हम अपनाकेँ असथिर नइ रखि सकब। तैयो जान बँचबैक उपाय करितौ, सेहो ने भेल...।

ओना, पत्नियोंक विचारक रस्ता गिरिधारीलालकेँ ठीके बुझि पड़लैन। कोनो कि एक्के रंगक आकि एक्के परिवारक नौत अबैए। सभ दिन जँ अही पुछ-पाछमे रहब तइसँ अपन हानि छोड़ि लाभ थोड़े हएत...। पत्नीपर सँ गिरिधारीलालक मन छिछैल कऽ समाज

---

[8] छलानन सन

[9] सुलबाहि बिमारी

दिस बढ़लैन। बढ़िते मन तरैंग गेलैन। तरैंग ई गेलैन जे बिना डोराडोरिक समाज अछि। कोनो ठौर-ठेकान अछिये ने..! मारियो-पीट करि लइए, केसो-फौदारी करि लइए, जहलो कटा-कटी करि लइए आ एकठाम जाँघ-मे-जाँघ मिला, ठहाका मारि-मारि भोजो-भात खाइते अछि। कहैकाल सभ कहत जे जेहेन खाएब अन तेहेन बनत मन। मुदा खाइकाल साँप-छुछुनरिक कोन बात जे कौओ-कुकुरक भोज खाइले लोक मुँह बबने रहैए।

मनक उनटल समाजक रूप देखि गिरिधारीलालक हृदय छँहो-छीत हुअ लगलैन जइसँ विचार बेसम्हार हुअ लगलैन। टुटैत मनक छुटैत सिनेहक विचार जगबैत गिरिधारीलाल पत्नीकेँ कहला-

“समयक दोखे जे अखन तक भेल ओ हमर अहाँक साधक बात नहि भेल, बेसाध भऽ गेल तँए एकरा छोड़ू।”

पतिक विचार सुकुमारी किछु ने बुझि रहल छेली जे पति की कहि रहला अछि। रौदमे काज करिकऽ एला हेन तँए मन घुमै छैन आकि की से आन थोड़े बुझब। बजली-

“तखन?”

पत्नीक विचार सुनि गिरिधारीलालक मन उमैड़ कऽ गुम्हैर गेलैन। गुम्हैरते मन कहलकैन, जाबे कोनो नीक काजक कियो संकल्पित नहि हेता ताबे ओइ दुखक निवारण नइ हएत। बजला-

“जाउ, अहाँ भानस करू गे, हम भोज खाइले नहि जाएब।”

ओना, सुकुमारीक देहमे आसकैत नहि छैन मुदा समाजक जे परम्परासँ चलि अबैत धारा अछि तइमे भँसिया कऽ मरैक डर तँ भाइये रहल छेलैन। बजली-

“समाजमे असगरे रहब?”

गिरिधारीलालक मन जेना संकल्पित धार दिस भँसिया गेलैन तहिना बजला-

“अहाँकेँ जे मन फुरए से अहाँ करू, हमरा जे मन फुरत से हम करब।”

❑ शब्द संख्या : 996, तिथि : 06 अप्रैल 2019

छाती बज्जर केलौं

छठि पाबैनसँ दू दिन पहिनहि झंझारपुरक हाट पड़इ छल। सप्ताहमे दू दिन हाट लगैए। रबि आ बुध दिन। गमैआ आन हाट जकाँ झंझारपुर-हाट बेरुपहरमे नहि बल्कि बजरूआ हाट जकाँ भिनसरुए-पहरमे लगैए। ओना, हाट नम्हरो होइते अछि। माल-जाल छोड़ि बाँकी सभकथुक। अन-पानि, तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ बजरूआ सभ वस्तुक खरीद-बिकरी होइत अछि।

काल्हि साँझुए-पहर सुमित्रा काकी विचारि नेने छेली जे जँ कौल्हुका हाट नइ करब तँ पाबैनमे बिथुत हएत। तहूमे ऐबेर आन साल जकाँ अपना बाड़ी-झाड़ीसँ किछु नहियेँ निकलत। किए तँ तेहेन बरखा आ बाढ़ि आएल जे बाड़ी-झाड़ीक सेखिये उतारि देलक। सभ किछु दहा गेल। आन साल जेहो किछु वौस बाड़ी-झाड़ीसँ निकलै छल से सभ किछु ऐबेर दहाइये गेल। जइसँ अपनो आ आनो-आनो जिनगीमे दुरकाल आबिये गेल अछि। मुदा तँए कि लोक पाबैन करब छोड़ि देत सेहो बात नहियेँ अछि। समय तँ अहिना अबैत-जाइत रहत, कोनो साल रौदी हएत, कोनो साल दाही हएत आ कोनो साल नीको होइते अछि। मुदा पाबैनक विध-विधान सभ दिनसँ जेना होइत आबि रहल अछि तेना तँ करैये पड़त।

साँझुए-पहर सुमित्रा काकी मने-मन अनुमानित हिसाब जोड़ि नेने छेली जे कहुना-कहुना पाँच साए रुपैआ खर्च हएत। हाथमे रुपैआ रहबे करैन तँए चिन्तो नहियेँ भेलैन।

भोरे उठि सुमित्रा काकी अपन सभ काज सहिआरि हाट विदा भेली। देखल-सुनल हाट रहबे करैन तँए संगी-साथीक खगतो नहियेँ जकाँ छेलैन। ओना, पाबैनक हाट छी तँए केतेको लोक हाट जेबे करता, नइ गामपर[10] तँ रस्तो-बाटमे संगबे हेबे करता...। पाँच साए रुपैआ साड़ी-खूटमे बान्हि सुमित्रा काकी हाट विदा होइत पुतोहुकेँ कहलैन-

“कनियाँ! हाट जाइ छी, कोनो ठेकान नहियेँ अछि जे करवन घुमब तैबीच अहाँ गाम परहक सभ काज सम्हारि लेब।”

आने-आनक पुतोहु जकाँ जलेसरी ‘हँ’ ‘हूँ’ किछु ने बजली। सुमित्रा काकीक मनमे बिसवास जगिये चुकल छेलैन जे जहिना घरक भार सुमझा कऽ जा रहल छी तहिना सभ किछु सम्हारि कऽ रखबे करती। मनमे सवुर भेने घरक चिन्ता (आजुक) मेटा गेलैन।

सुमित्रा काकी घरसँ निसचिन्त भऽ हाट विदा भेली।

हाट करैले गामोक बहुत लोक विदा भेलो छला आ भेलो छेली। कियो टेम्पूसँ, कियो मोटर साइकिलसँ, कियो साइकिलसँ तँ कियो पएरे...। सुमित्रा काकीकेँ जँघियाएल झंझारपुर हाट छैन्हे तँए अनेरे अनका पएरे चलबकेँ नीक नहि बुझि अपने पएरे विदा भेली। पहिलुका डेढ़ कोस अखुनका पाँच किलोमीटरपर गामसँ झंझारपुर-हाट अछि। ओना, पएरे गेनिहार सेहो बहुत गोरे छेली मुदा सुमित्रा काकी संगबे-संग चलबसँ नीक असगरे चलबकेँ बुझै छैथ। हुनक अपन विचार छैन जे संगबेक संग चलब नीक अछिए, किए तँ गप-सप्प करैत रस्तो कटैमे हल्लुक होइए आ जँ रस्तामे केतौ कोनो जरूरतो भेल तँ सेहो पूर्ति होइए। मुदा सुमित्रा काकीक अपन विचार छैन। ओ अपने-आपमे काजकेँ संगी बना चलैमे बिसवास

---

[10] घरपर

रखै छैथ। अपन विचार छैन तँए बुझै छैथ जे जखने संगी-संग गप-सप्प करैत चलब तखने गपे-गप्पमे दोस्तियो भऽ सकैए आ गपे-गप दुश्मनियोँ तँ होइते अछि। जँ कहीं रस्तामे दुश्मनीक असुल हुअ लगल तखन तँ सभ काज पानिमे चलि जाएत, तइसँ नीक जे असगरे चली। ओना मूल विचार सुमित्रा काकीक ई छैन जे संगी-साथीक संग चलने गप-सप्पमे समय तेना बोहिया जाइए जे एक घन्टाक काज डेढ़ो-दू घन्टामे नहि भऽ पबैए। तहूमे जँघियाएल हाट छैन्हे, एक घन्टा जाइमे लगैए आ एक घन्टा अबैमे। जखन जानियेँ कऽ काज करए जा रहल छी तखन ओते समैयो ने ओइले उसरैग देने छिऐ।

हाट पहुँचते सुमित्रा काकी हाटक दृश्य जखन देखलैन तँ मोन पड़ि गेलैन बाबाधामक पण्डाक बेंत। गेलौं भोला बाबाक दर्शन करए मन्दिरमे आ तेते भक्तक भीड़ रहै जे पण्डा सभकेँ लाठीचार्य करए पड़लैन...। सुमित्रा काकीकेँ सेहो पान-सात बेंत लगि गेल छेलैन। ओना, देहगर-दसगर रहने चोट देहमे निजा गेल छेलैन मुदा देहपर जे बेंत बरिसल रहैन ओ आँखि तँ देखिये नेने रहैन तँए नजैरपर भीड़ पड़िते मोन पड़लैन। सौंसे हाट एकबेर टहैल कऽ देखि लेब सुमित्रा काकीक मनमे रहबे करैन। किए तँ बेवहारिक मन रहने एते धियान रहबे करैन जे जँ एक दिससँ समान कीनब शुरू करब तखन तँ बहुत समान छुटिये जाएत। माने जेते समान लेबाक छेलैन जँ ओइमे दाम बढ़ि गेल हएत तखन। जखन पाबैनक वस्तुए छुटि जाएत तखन तँ ओ खोँरे पाबैन ने भेल। खोंर पाबैन केनौं आ नहियोँ केने बात बरबैरे..! किए तँ खोंरक कोनो सीमान अछिए नहि। एकोटा भऽ सकैए आ बेसियो तँ भइये सकैए।

हाटक दृश्य देखि सुमित्रा काकी बुझि गेली जे गाम-घरक वेपारी, माने फल-फलहरी, आदी-हरदी आरो-आरो पाबैनक

विहीतक वस्तु उपजौनिहार भरिसक बाढ़िमे डुमि कऽ मरि गेला अछि तँए निपत्ता भेल छैथ। सभकेँ बुझले अछि जे मधुबनी, दरभंगा आ सुपौल जिला बाढ़िक सोसरारि छीहे...।

झंझारपुर-हाटमे समस्तीपुर इलाकाक वेपारी सभ अपन-अपन दोकान चमकौने छला। ओना, ओहो सभ धोखा खेलैन। जे कियो होशियार छला ओ तँ अनुमान करि कऽ दोबर-तेबर समान उतारि, दोबर-तेबर कमाइयो लेलैन, मुदा जे नट्ठा वेपारी रहैथ ओ ओतबे समान लऽ कऽ पहुँचल छला जेते अनदिना लऽ कऽ पहुँचै छला। हाटक रूखि देखि सुमित्रा काकीक मन थकथकाएल सन बुझि पड़लैन, मुदा लगले अपन पबन्ती मन छड़ैप कऽ आगूमे आबि कहलकैन-

“लोकक देखौंस ओतबे करब जेते छजत। कहलो जाइ छै जे झूठक प्रतिष्ठा-ले जान नइ गमाबी।”

सुमित्रा काकीक थकथकाएल मनमे दुनियाँक बीच अपन दुनियाँक सीमा बनबैक विचार उठलैन। अपन सीमानक बीच विचार केलैन जे पहिने छिट्टा कीनब आवश्यक अछि। किए तँ ओ समटल-सौंस वस्तु अछि, टुकड़ा-टुकड़ी नइ हएत, मुदा आन वस्तु तँ से भइये सकैए। तैसंग मनमे ईहो उठलैन जे परदेशिया जकाँ थोड़े अपन जिनगी अछि जे झोरा-झण्टी लऽ कऽ बजार जाएब आ एक साए ग्राम टमाटर आ अढ़ाइ साए ग्राम अल्लू कीनि आनब। अपन तँ पाबैनक हाट छी, छिट्टा भरि समान हेबे करत। तहूमे समस्तीपुरक जहिना आदीक गाछ तहिना हरदियोक गाछ छीपगर होइते अछि। केतबो नमहर छिट्टा रहत तैयो ओकर छीप छिट्टासँ बाहरे रहत।

जहिना भगवानक मनमे सदिकाल बिसवास बनले रहै छैन जे

कम-बेसी आ टुट-नफाक कोनो महत् नहि अछि तँए मनमे सुख-दुख, सोग-पीड़ा आ हानि-लाभ नहियेँ रहै छैन तहिना सुमित्रा काकीक मनमे सेहो रहबे करैन जे नइ पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ काजक निमरजना निमरजने भेल। तहूमे छिट्टा के कहए जे छिट्टोसँ बाहर हरदी-आदीक गाछ पसैर गेल छेलैन तँए देखनिहारो बुझबे करता जे निवृष्टि पबनियाँ छथिए। नइ बहुत तँ कम्मो सिनेह सुमित्रा काकीक प्रति हेबे करतैन।

माथपर छिट्टा नेने सुमित्रा काकी विदा हुअ लगली कि मोन पड़लैन जे अखन तक तँ पाबनियेँक पाछू लागल रहलौं, अपने चाह कहाँ पीलौं।

दस डेग आगू रस्ते दिस, चाहक दोकान अछिए। दोकानपर पहुँच आगूक निच्चेमे छिट्टा रखि सुमित्रा काकी दोकानक ब्रेंचपर बैसली। चाहे दोकान छी, निच्चाँमे छिट्टा देखि एक गोरे कहलकैन-

“बुड़ही माता, पाबैनक छिट्टा भुइयाँमे रखै छी! चाहक दोकान छिऐ ऐँठ-काँठक कोनो विचार अछि।”

चाहक धीपल सुआदमे सुमित्रा काकीक अपन मनक सुआद ठण्ढा गेल छेलैन माने कम पड़ि गेलैन मुदा तैयो मनमे उठलैन-भगवान तँ उचित निसाफ करैत मनुक्खक शकल तैयार करै छैथ, एक्के रंग साढ़े तीन हाथ लम्बाइ, गज-गजे भरिक हाथो-पएर तैपर दूटा आँखि, दूटा कान सेहो सभकेँ दइते छथिन मुदा एहेन कोन चीज अपना-ले मनुक्खकेँ छोड़ि दइ छथिन जे कियो अन्हारमे टप्पा-टोइया करैए तँ कियो पूर्णिमाक इजोरियामे पच्चीसी खेलाइए। मुदा से सभ किछु नहि बाजि सुमित्रा काकी वृद्ध मैया जकाँ बजली-

“बौआ, नहाइसँ पहिने जहिना लोक अशुद्ध रहैए आ नहेला पछाइत शुद्ध भऽ पूजापर बइसै-जोकर भऽ जाइए तहिना ने

पाबैनक जे विहीतक-वस्तु अछि ओकरो जखन धोइ-पोछि कऽ शुद्ध बनाएब तखनसँ ने पाबैनक वौस हएत।”

ओना, चाहक दोकानपर आन-आन बहुत लोक रहइ, मुदा जे बाजल छल ओ बिच्चेमे उठि कऽ चलि गेल। तैबीच चाहक गिलासो सुमित्रा काकीक हाथमे पहुँच गेल छेलैन तँए गपक धुन थीर भऽ चाहक धुन सवार भऽ गेल छेलैन। चाह पीब सुमित्रा काकी माथपर छिट्टा नेने गाम दिस विदा भेली। घरपर अबैत-अबैत सुमित्रा काकीकेँ बारह बाजि गेलैन। कतिका रौद, तँए मनक संग चानियोँ अगिया गेले छेलैन।

सुमित्रा काकीकेँ देखिते खुट्टा परहक पियासल गाए हूकरल। सुमित्रा काकी बुझि गेली जे गाए पानि नइ पीने अछि। जखन पुतोहुकेँ घरक सभ भार सुमझा गेल छेलौं तखन गाए पियासल किए अछि?

जिनगीक मझधारमे सुमित्रा काकी पड़ि गेली। जे होनी छल से तँ भइये चुकल। माने दस बजेमे पानि पीबैवाली गाए अखन तक पियासले अछि। मुदा जँ पुतोहुकेँ कोनो उत्कठ बात कहबैन तँ जरूर ओ विपरीत दिशामे मुड़ि जेती। विपरीत दिशाक मोड़क कारण होइए ओहन जिनगी जे अपन श्रम आधारित होइत जे क्रियागत रस्तासँ जिनगी गुजारैत अछि आ दोसर परालंबित जिनगी होइत जे दोसरपर आधारित अछि, समयानुक्रम दुनूक बीच घटी-बढ़ी भेने नीक-बेजाए फल सेहो दइते अछि, दुनूक बीच पीरित आ विपरीत दिशा बनैमे मोड़ अबिते अछि।

हाटपर सँ जहिना छिट्टा नेने सुमित्रा काकी आएल छेली तहिना ओकरा समेट कऽ ओसारपर रखि गाएकेँ नमबैले पानि आनए कलपर गेली। भरि बाल्टी पानि गाइयक आगूमे रखिते गाए

हपैस कऽ पानि पीबए लगल।

गाइयक तरस देखि सुमित्रा काकीक मन पुतोहुपर तरसलैन। मुँह खोलि तँ नहि मुदा मने-मन बजली-

“एहेन पुतोहुसँ छाती बज्जर केलौं।”

मुदा लगले मन रोकैत विचार देलकैन, कियो केकरो कहि कऽ थोड़े जनम नेने अछि जे केकरो भरोसे कियो मुँह तकैत चौबट्टियापर ठाढ़ रहत। अपना भरोसे जन्म नेने अछि अपना आशापर जिनगी बितबैत चलत।

❑ शब्द संख्या : 1402, तिथि : 08 अप्रैल 2019

नाँहकमे दोख

विधान सभा चुनावक गहमा-गहमी जोड़ पकैड़ लेलक। वातावरणमे जहिना भोँट लइबला तहिना भोँट दइबला अपन-अपन हिसाबो आ समीकरणो अपना-अपना मने जोड़ए-बनबए लगला। सबहक अपन-अपन मनक हिसाबे अपन-अपन हिसाब चलए लगलैन। स्कूल-कौलेज जकाँ ने अलग-अलग विषय आ ने फेकैल्टी बल्कि सबहक सोझमे मात्र एक विषय- चुनाव। एक विषय तँए एक्के फेकैल्टी। केना चुनावमे बेसी भोँट हएत जे जीतक मुँह आँखि देखब। जँ से नहि तखन तँ हारक हार गरदैनमे लटकले रहत। ओना, आइ धरिक जे क्षेत्रक हिसाब छल तहूमे तोड़-जोड़ भेबे कएल अछि, किए तँ विधान सभाक नव परिसीमन भेने पैछला हिसाब सेहो गड़बड़ा गेल छैन। गड़बड़ा ई गेल छैन जे कोनो क्षेत्रक प्रतिनिधिक गाम-घर कटि दोसर क्षेत्रमे चलि गेल छैन, तँ कोनो क्षेत्रक भोँटरक गाम-घर कटि कोनो क्षेत्रमे चलि गेलैन हेन। मुदा तैयो एते तँ आशा सबहक मनमे बनले छैन जे जहिना प्रतिनिधि भोँटर गढ़ि लेता तहिना भोँटरो प्रतिनिधि गढ़िये लेत...। खाएर जे अछि से अछि एकसंग सातटा केन्डीडेट क्षेत्रमे ठाढ़ छथिए। सातो केन्डीडेटमे एकटा जीतल केन्डीडेट, बाँकीमे दूटा हारल-जीतल आ चारिटा नव केन्डीडेट मैदानमे फाँढ़ बान्हि उतरले छैथ। हारल-जीतल केन्डीडेटक माने भेल पैछला चुनावमे जीतल छला आ मौजुदा समयमे हारल छैथ। ओही सातो केन्डीडेटमे ललन कुमार

सेहो एकटा छथिए।

ललन कुमार अपन विधान सभा क्षेत्रकेँ पुस्तैनी क्षेत्र बुझिते छैथ। ओना, भोँटरक किछु नहमर पौकेट–माने अधिक भोँट होइबला क्षेत्र–मे चलि गेल अछि तहिना दोसर किछु ओहन क्षेत्र आबियो गेल अछि जइमे किछु ओहन भोँटरक सम्भावना बढ़बो केलैन हेन जे अपन खासम-खास बुझि पड़ै छैन। तैसंग ईहो सम्भावना बनियेँ गेलैन हेन जे जे गाम सभ नव सिरासँ क्षेत्रमे जोड़ाएल हेन, तइमे जाइतिक समीकरणक हिसाबसँ बेसी अनुकूले छैन।

पैछला चुनावमे पनरह दिन पूर्व ललन कुमार भोँट माँगए लालपुर गाम पहुँचला। लालपुर ओहन गाम अछि जइमे दर्जनो ओहन जाति अछि जेकरा ऊपर आन जाइतिक दबदबा नइ अछि। लालपुरक भोँटर अपना विचारसँ भोँट खसबै छैथ।

लालपुर गाममे प्रचार करैत ललन कुमार रामसेवक ऐठाम पहुँचला। ओना, ललन कुमारक मनमे एहेन विचार रहबे करैन जे पुस्तैनी क्षेत्र सेहो छीहे, तहूमे पैछला चुनावमे जीतलो छीहे। तैसंग ईहो जे रामसेवकक सपरिवार एक मुँहरी भोँट पैछला चुनावमे देनहि अछि। जे अपनो बुझै छी आ रामसेवक सेहो बुझिते अछि, अपना हाथे अपन भोँट रामसेवक देने छैथ।

पैछला चुनावक दरमियान जखन ललन कुमार अपन कफलाक संग रामसेवकक ऐठाम आएल छला तखन चाहो-पान चलल छल आ अपन लिखल एकटा पोथी ललन कुमारक हाथमे रामसेवक देने रहैन। जेकर साक्षी दर्जनो आँखि भेबे कएल छल। ललन कुमारक हाथमे पोथी देला पछाइत रामसेवक बाजल किछु नहि। किए तँ सभ बात पोथीमे लिखल छेलैहे तँए लिखतनक आगू

बकतनक मोले की। ओना, ललन कुमार सेहो हाथमे पोथी लऽ बिना किछु पढ़ने संगबेकेँ हाथमे दैत राखि लेलैन। चुनावी दौड़ छिऐ, ओते समैयो तँ अखन नहियेँ अछि। पोथीक मादे ललन कुमार अखन किछु ने बजला। जे उचितो छल, किए तँ बिनु देखने-पढ़ने कोनो पोथीक सम्बन्धमे बाजबो नीक नहियेँ हएत।

ऐबेरक चुनावमे एकटा विधि आरो बढ़ि गेल, जे पहिने नइ छल। ओ विधि छी 'नोटा' माने नोटा भोँट।

अखन तक जे भोँटक प्रक्रिया छल ओ ओहन छल जे सौंसे देशक लोक कोनो-ने-कोनो राजनीतिक पार्टीसँ जुड़िये जाइ छैथ, किए तँ अपन विचारसँ अपन भोँट खसबै छैथ। भलेँ ओ राजनीतिक पार्टीक आधारपर हुअए वा जाइतिक आधारपर वा टोले-पड़ोसक आधारपर किए ने हुअए। तँए जहिना बिनु ठेकानक भोँटर, तहिना बिनु ठेकानक प्रतिनिधि (नेता) सेहो छथिए। कहब जे भोँटर तँ केतौ पार्टीक नाओंपर, केतौ जाइतिक वा क्षेत्रक नाओंपर भोँट बिलहैत अपने बेठेकान भऽ गेला मुदा प्रतिनिधि तँ से नइ छैथ? मुदा प्रतिनिधियो ओहने बेठेकानल भऽ जाइ छैथ जे जिनका जे पार्टी उम्मीदवार बनौलकैन से तइ पार्टीक सिद्धान्तकारो भेला आ नेता वा कार्यकर्त्ता तँ भेबे केला। काल्हिक जे धर्मनिरपेक्ष आ जनकल्याणक बात मुहसँ नेताजी बजै छला ओ आइ उनटल-उनटल वा बदलल-बदलल बजैये पड़ै छैन।

राजनीतिक विचारधारा देखि सृजनकर्त्ता रामसेवक मने-मन विचारलक जे अनका चलैत जँ अपन विचारधाराकेँ तोड़ि तिलांजलि दऽ दी ई उचित नहि, भलेँ ओ धारक धारा किए ने टुटि जाए...। तँए भोँट केकरो देबे ने करब। माने बिनु विचारक लोककेँ विचारक विचार देब। मुदा लगले भारत सन देशमे जैठाम

आजादीक सत्तैर बर्खक पछातियो लोक भोँट की छिऐ से नहि बुझि पौलैन अछि, तैठाम भोँटसँ हटबो तँ उचित नहियेँ, माने भोँट नइ खसाएब अनुचित हएत। मकड़ा-जाल जकाँ गाम-समाजमे चारूकात जाल लगले अछि। आखिर मकड़जाले बनौनिहारक ने ई दुनियाँ छी, जेकरा जेहेन मकड़जाल बनबैक लुइर-बुइध छै से तेहेन जाल बुइन अपन दुनियाँ गढ़ि लइए...।

धर्म-संकटोसँ भारी संकट रामसेवकक आगूक विचार-संकट फँसि गेल। लोक लग केना बाजत जे भोँटे ने खसाएब। असमंजसमे पड़ल रामसेवक निर्णय केलक जे अपन भोँट 'नोटा'मे देब।

पाँच बर्खक पछाइत फेर ओहने दिन घुमल जे दिन पाँच बर्ख पूर्वक छल। ललन कुमार भोँट माँगए रामसेवक ऐठाम फेर औता।

पाँच बर्ख पूर्व जे आँखि सभ ललन कुमारक हाथमे रामसेवकक पोथी देखने छल ओ आँखि तँ अखनो जीवित अछिए। गामक जानल-मानल लोक सिंहेसर भाय छैथ।

आठम दिन भोँट छी। अपन मुँहकेँ बन्न राखब उचित नहि बुझि रामसेवक भोँटक गहमा-गहमीमे सिंहेसर भाय ऐठाम पहुँचल। सिंहेसर भाय भनसिया सबहक तमसाइ दुआरे दरबज्जेपर चाहक सभ ओरियान केने छैथ। ओना, आन्तरिक लाभ सिंहेसर भायकेँ अपने छैन, ओ ई छैन जे अखनो चुल्हिक सेवाकेँ ओ जिनगी जीबैक प्रमुख कर्म बुझै छैथ। खाएर जे-से...। रस्तेपर सँ रामसेवक कहलकैन-

"भाय, गोड़ लगै छी!"

दुनू हाथे आग्रह करैत सिंहेसर भाय बजला-

"आबह, आबह बौआ सेवक, केतए तोहूँ हेराएल रहै छह से

पते ने चलैए।”

रामसेवक-

“भाय, हेराएब किए! आइ-काल्हि जिनगी सम्हारैमे बितियबैमे लगल रहै छी तँए मुँह-मिलानी नइ होइए।”

आग्रह करैत सिंहेसर भाय बजला-

“हम अखने चाह पीलौं हेन, तोरा चाह पीबैक मन होइत हुअ ते चलह चुल्हे लग दुनू भाँइ चाहो बनाएब आ गपो-सप्प करब।”

एक तँ ओहुना अपना ऐठाम ओ संस्कृति जीवित अछि जे अपनासँ जेठ जनक आगू चाहोकेँ हेय दृष्टिसँ देखल जाइए जइसँ छोटजन अपनाकेँ वर्जित केनहि रहैए। तमाकुल, पान, बीड़ी, सिगरेट इत्यादि-इत्यादि तँ सहजे वर्जित जकाँ अछिए। भलेँ ओ परोछमे किए ने खाइत-पीबैत हुअए...। रामसेवक बाजल-

“भाय साहैब, चाह नइ पीब।”

जेना कोनो चीज केकरोसँ लइकाल वा कोनो विचार बुझैकाल रंग-रंगक खाइयो-पीबैक आ गपो-सप्पक क्रम चलिते अछि ओही क्रममे सिंहेसर भाय रामसेवककेँ कहला-

“बौआ, टेबुलपर तमाकुलक डिब्बी अछि, तोरा हाथक तमाकुल खेना बहुत दिन भऽ गेल, हुअ तँ तमाकुल लगाबह।”

अधमरु साँप जकाँ रामसेवकक मन छटपटेबे कएल, किए तँ तमाकुल कि सभकेँ चुनौल होइए, ओ तँ खाइयेबलाकेँ होइए। ओना, सिंहेसरो भाय बुझै छैथ आ रामसेवको अपन बात बुझिते अछि जे तमाकुल खाइ छी।

तमाकूल खेला पछाइत सिंहेसर भाय बजला-

“रामसेवक, भौंटक की हाल-चाल छह?”

रामसेवक बाजल-

"भाय साहैब, अपन भोँट हम 'नोटा'मे देब।"

'नोटा' सुनिते सिंहेसर भाय पुछलखिन-

"किए?"

रामसेवक बाजल-

"ओइ दिन अहूँ रही ने जइ दिन ललन कुमारक हाथमे अपन पहिल रचना यएह सोचि ने देने रहिऐन जे साहित्यिक परिवारक ललन कुमारक छैथ, अपनो नीक जानकार छथिये तँए किछु साहित्यिक विचार देता जे भविसक लेल उपयोगी हएत। मुदा पाँच बर्खक बीच ओ किछु ने देलैन।"

मुड़ी डोलबैत बिच्चेमे सिंहेसर भाय बजला-

"हँ से तँ देखनहि रहिहह। ललन कुमारक हाथमे पोथी दैत।"

चुनाव सम्पन्न भेल। ललन कुमार हारि गेला। ओना, भोँटक दिन, जइ दिन भोँट रहए, रामसेवककेँ भोँट खसबैक विचार सेहो बदैल गेल। बदैल ई गेलै जे जखन भोँट 'नोटे'मे देब, तखन अनेरे जे तीन-चारि घन्टा समय बर्बाद हएत तइसँ नीक जे बूथ दिस जेबे ने करब। औझुका 'हो-हा'मे केकर मन एते असथिर छै जे हमर खोज-भाँज करत।

चुनावक किछु मासक पछातिये रामसेवककेँ सातो केन्डीडेटक समर्थक लोकैन भोँटक प्रतिक्रिया बुझैले आबए लगला। ललन कुमारक समर्थक सेहो आबि रामसेवककेँ पुछलखिन-

"रामसेवक, ललन भायकें भोँट नइ देलहुन?"

जहिना शिवजी वा ब्रह्माक वरदानसँ कियो अभय भऽ जाइए

तहिना रामसेवकक मनमे अभयपनक आगमन भइये चुकल छल। उतारा दैत रामसेवक बाजल- “नइ देलिऐन। नइ दैक कारण भेल जे ओ हमरा भोँटकेँ, माने पूर्वक देल भोँटक महत्-केँ ललनजी कोन रूपेँ बुझलैन। एतबो जँ अपने मुहसँ वा समदियोक माध्यमसँ समाद दितैथ जे पोथी पढ़लौं। तैयो हृदयमे सन्तोख होइत, मुदा से हृदयक हीर टुटि गेल। जखन हृदयक हीरे टुटि गेल तखन पागल छोड़ि भइये कि सकै छी। तँए पगलाक जहिना विचारक कोनो महत् नहि, तहिना ने भोँटोक हएत। तँए नइ देलिऐन।”

बाँकी छबो केन्डीडेटक एक्के उपराग जे हमरा रामसेवक भोँट नइ देलक?

रामसेवको एक्के मुहेँ छबोकेँ जवाब दैत बाजल- “जँ हम किनको भोँटे ने देलौं ते कियो जीतला केना। तहिना जे लाखक-लाख भोँटसँ हारला ओ हमरे भोँट नइ देने हारला। जँ एक भोँटसँ हारल रहितैथ तखन ने रामसेवक दोखी होइत, से तँ नहि अछि।”

ओना, बजैक क्रममे रामसेवक बाजि गेल मुदा लगले आत्माराम दुतकारए लगलै- जखन हम भोँटे ने खसेलौं तखन किनको दोख लगौने दोखी हएब। नाँहकमे कियो दोख लगेता तँ लगबौथु। मुदा दोख लगबैसँ पहिने ई कहि दौथु जे हम भोँट नइ किए देलिऐन। हम तँ खुलल मुहेँ बजै छी मुदा ओही खुल्ला मुहेँ ईहो ने कहता जे रामसेवक भोँट देलक केकरा। सातो लड़निहारक तँ एक्के दोख अछि।

जहिना कियो पियासल पानिक अतल[11]मे पहुँचते अथाह पानि देखि तुष्टिसँ भरि जाइए, जहिना भूखल जखन ‘भू’क[12] उपैत-

---

[11] गहराइ

[12] धरतीक

शक्ति देखि शक्तिबलसँ भरि जाइए तहिना रामसेवकक मन सेहो अपन विचारशील विचारसँ लबालब भरि गेलइ। तँए सातोक उपरागकेँ अपराग बुझि रामसेवक अपन धियान ओहन धारणासँ हटबैत बाजल-

“कियो नाँहकमे दोख लगौता तँ लगाबौथु, अपन मुँह छैन अपना मुहेँक वाणि छैन, उबाणि बुझौथ कि सुवाणि से अपने जनता।”

❑ शब्द संख्या : 1463, तिथि : 16 अप्रैल 2019

सग्गा पिऔज

फगुआक तेसर दिनक बेरुपहर बाध दिस टहलए विदा भेलौं। बेरुका समैयक समगम मनसून रहने मौसममे खुशनुमा आबिये गेल छल। तहूमे आन सालसँ नीक समय अछि। किएक तँ गोटे साल बेसी शीतलहरी भेने पूसे-माघ जकाँ फागुनो-चैत खुशनुमासँ बेसी दुखनुमे रहैए, तहिना गोटे साल शीतलहरीक संग बरखा भेने आरो बेसी दुखनुमा रहबे करैए आ तहिना जइ साल ने शीतलहरी भेल, ने जड़ैया बरखा आ ने अपना हिसाबक बरसातीए बरखा भेल, माने कम बरखा भेने धरतीसँ असमान धरि अगते तबए लगैए जइसँ वसन्त ऋृतु रहितो खुशनुमा मौसम नहि बनि पबैए, से ऐबेर नहि भेल। रस्ते-रस्ते बाध दिस जाइत रही। रस्ताक दुनू कात लोकक घरो-दुआर आ बसो-बास अछिए। बासक सीमा टपिते बाध शुरू होइए। ओना, जेकरा बाध कहै छिऐ, जइमे खेती-बाड़ी होइए तइसँ पाछूए आ गाम-बाससँ थोड़ेक आगू बीचमे गाछी-कलम–बँसबारि, शीशबोनी, बगुरबोनी इत्यादि-इत्यादि अछि। रस्तेकातक पुबाइर भागक दरबज्जापर तीन-चारि गोरे एकठाम बैस गप-सप्प करैत रहैथ। जखन दरबज्जा सोझे पहुँचलौं तखन एक गोरेक मुहसँ निकलल-

"ऐबेर सग्गालालक गोटी गाममे सभसँ बेसी लाल भेल।"

तीनू-चारू गोरेक बीचक गप-सप्प, कोन गपक क्रममे एहेन विचार उठल से तँ अपने बुझल छल नहि तखन जँ रूकि कऽ

पुछिऐन जे की 'लाल भेल' से उचित नहि। किए तँ जहिना अपन जिनगी अछि तहिना ने आनोक अछिए जइमे सदैतकाल गोटी लाल-कारी होइते रहैए। जाबे चाहे-कि-पाने आकि बीड़िये-तमाकुल नइ खेने-पीने रहलौं ताबे मन करियाएल रहैए आ खाइते-पीबिते लाल भाइये जाइए। आगू बढ़ि गेलौं...। किछु आगू बढ़ला पछाइत दोसर दरबज्जापर सेहो दू गोरेकेँ बैस गप-सप्प करैत देखलौं। ओना, रस्ते-रस्ते जाइत रही तँए गप-सप्पक पहिलुक कड़ी तँ ने सुनल आ ने बुझल छल, मुदा चेहराक रंग-रूपसँ बुझि पड़ल जे कोनो जीवनोपयोगी विचार कऽ रहला अछि। ओना, चेहराक रंग-रूप, रंग-रूपक माने दुनू, मनुक्खक ऊपरियो चेहराक रंग-रूप आ मनोनुकूल काजक चेहराक रंग-रूप सेहो, दुनू नीक बुझि पड़ल। एक गोरे दोसरकेँ विचार करैक नियतसँ गम्भीर स्वरमे गहींर बात बजला-

"सग्गालाल सभसँ जीयल-जीतल लोक गाममे अछि।"

ओना, काने-कान सुनैत गेलौं मुदा मने-मन जे घोंट हेबा चाही से नहि घोंटि आगू बढ़ि गेलौं। टोल टपैत गाछी-कलम सेहो टपि गेलौं। गामक दछिनबरिया बाघ नमहर अछिए। बाधक मुहों-कान नीक अछि। कहैले गाममे चारिटा बाध अछि, पुबरिया, पछबरिया, उतरबरिया आ दछिनबरिया, मुदा तइमे सभसँ नीक बाध अछि दछिनबरिया। तेकर कारणो अछि। पुबरिया बाध नाममात्रेक अछि, किए तँ सटले दोसर गामक सीमा पड़ैए। अपना गामक सीमामे जे पड़ैए ओ ऊँचरस जमीन अछि, जइमे गाछिये-कलम अछि, जइसँ जोत-कोर नइ भेने बाधक हिसाबमे अछियो नहियेँ आ पछबरिया बाधक जमीनक माटिये मरल छइ। माने उसराह-बलुआह माटि अछि जइमे अदहासँ बेसी जमीनमे कुशे उपजैए आ किछु जमीन जे उपजाउ अछियो ओइमे रब्बीक समयमे जौ आ खरीफक समयमे

थोड़-थाड़ धानटा होइए। बँचल उतरबरिया बाध। उतरबरिया बाधमे धार तेना बीचो-बीच बहि रहल अछि जे बाधे कटि धार बनल अछि। ओना, आन गाममे वएह धार उतरे-दछिने बहैए मुदा हमरा गाममे आबि पुबे-पछिमे भऽ गेल अछि। खाएर धार रहितो धारे अछि, मुहेँ-मुँह सुनितो छीहे जे 'धार-कातक चास, धनिक लोकक घर लगक बास, एकर केखनो ने बिसबास।' खाएर जे जेतए अछि से तँ अछिए।

अपन गामक दछिनबरिया बाध जहिना अन्नदाता छी तहिना जीवनदायिनी सेहो छीहे ने। जहिना सालो भरि जिनगीकेँ संचालित करैक शक्ति छै तहिना ने ओकर रच्छ-रक्षा करैक शक्ति सेहो छइहे।

बाधमे प्रवेश करिते रस्ताक सुनल दुनू विचार मनमे जगि गेल। विचार तँ जगि गेल मुदा विचारैक जे प्रक्रिया अछि से जगबे ने कएल। किए तँ तीन रस्तासँ विचारैक प्रक्रिया चलैए। पहिल- पुस्तक पढ़िकऽ अध्ययनसँ, दोसर- कानसँ सुनिकऽ आ तेसर- अपन मनक मननसँ। मुदा मननक लेल जइ साधनक खगता रहैए ओ रहबे ने कएल, किए तँ गाममे रहितो सग्गालालक विषयमे ने किछु जानि पेने छेलौं आ ने जानैक कहियो परियासे केलौं। एहेन कोनो हमरे टा भेल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। ई तँ भेल अपन गामक बात जे अपन परिवारोमे एक-दोसराक बीच सम्बन्ध ओहने बनलो अछि आ बनियोँ रहल अछि जे एकठाम रहितो एक-दोसराक जिनगी नहि बुझि रहल छी। जिनगी सुखाएल वा मरियाएल धार थोड़े छी जे लोक ओकरा झाँपि कऽ आकि नुका कऽ राखत। ओ तँ जीवित धारामे बहैत कोसी-कमला-गंगा-यमुना-सरस्वतीक मझधार छी जे गंगासागर होइत प्रशान्त महासागरमे पहुँच प्रशान्त-चित्तसँ बास करैत चलैए।

संयोग बनल, सग्गालाल सेहो ओही रस्ते खेत जा रहल छल।

ओकरा कोन मतलब छै जे हजारो बीघाक एतेटा बाध दिस तकैत आँखिकेँ चोन्हियबैत आगू बढ़ैत। ओकर तँ अपन बीघा भरिक चास छै जइमे सालो भरि बास करैत रहैए। गौआँ छीहे, तँए चेहरा-मोहरासँ सग्गालालकेँ नइ चिन्है छिऐ सेहो बात नहियेँ अछि। तखन ईहो बात झूठ नहियेँ अछि जे सग्गालालकेँ हम मनुक्खक मात्र सकल टा बुझै छिऐ...। मन दुतकरए लगल जे जखन सग्गालालकेँ गाम दिससँ अबैत देखि लेलिऐ तखन ओकरे पुछि किए ने ओकरे-मुहेँ ओकर बात सुनि अपना मनमे रोपि ली जे देखल-सुनल खरहीक गाछ जकाँ हुअए कि केराक पौंछ आकि बाँसेक ओइध जकाँ वा ओले-अड़िकंचनक टोंटी-पेंपी जकाँ किए ने हुअए...।

मुदा किछु अधिक हटल रहने जोरसँ सग्गालालकेँ टोकैक मन भेल। मन भेल ओतेक जोरसँ बाजी जेतेक दुनू गोरेक बीचमे दूरी अछि। मुदा लगले मन कहलक- सग्गोलाल तँ बाधे दिस आबि रहल अछि। जोरसँ बाजबो तँ नीक-अधला दुनू होइए। माने केतौ नीको होइत अछि तँ केतौ अधलो होइते अछि।

नीक-बेजाए-सँ विचार उठिते छल कि चारि लग्गा पाछूए-सँ सग्गालाल बाजल-

“भाय साहैबक सवारी किमहर-किमहर निकलल छैन?”

सग्गालाल कोनो बेसी पढ़ल-लिखल लोक नहि, मुदा अख्यिासी लोक जरूर अछि। मात्रिकमे जन्म नेने सग्गालालकेँ मात्रिकक एते ज्ञान भइये गेल छै जे सालो भरिक रोजगार केना जगैए आ ओकरा जीवित राखि केना चलल जा सकैए से जनैए। जखन सग्गालालक जन्म भेल तखन फागुने मास रहै, सग्गालालक मामाकेँ दस कट्ठा सग्गा पिऔज तैयार भऽ गेल रहैन, परिवारक सबहक मन पियाजक पातसँ लऽ कऽ पियाजक गाँठ होइत सीरक

बीच जे सिरगर आमदनी अछि तेतए तक टँगले रहैन, तही बीच सग्गालालक जन्म भेल छल जइसँ परिवारक एकमुँहरी विचारक प्रभावे 'सग्गालाल' नाओंसँ सग्गालाल दगा गेल। दागक फल केकरा केहेन भेटैए ओ तँ नामसँ दगाएले दगाएल सभ बुझता, तइसँ सग्गालालकेँ कोन मतलब। ओ तँ अख्यािसी लोक छैथ। कानक सुनल बोलक अनुकरण-स्मरण करैत बाजल छला। ओना, 'जे रोगीक मन भावए से वैद फरमाबए' सोल्होअना मनक पाशक पाशा पलटैत बजलौं- "सग्गालाल की हाल-चाल?"

ओना, अपना जनैत 'रामायण' जकाँ चारिये अक्षर बजलौं, मुदा अख्यािसी मनुक्ख सग्गालाल छीहे, जहिना उड़न-खटोला[13]क हीर पकैड़ झुलौनिहार आस लगबैत गतिकेँ तेजो करैए आ असथिर करैत असथिरो करिते अछि तहिना सग्गालाल बाजल-

"भाय साहैब, दुनियाँक जे हाल-चाल हौ मुदा अपन पूरवते अछि।"

सग्गालालक बात सुनि मनमे कोनो विचार भाँजेपर ने चढ़ल जे सग्गालाल की बाजल। पुछलिऐ-

"से की सग्गालाल?"

सग्गालाल बाजल- "भाय साहैब, दुनियाँ जनैए जे भगवान रामक जन्म अयोधिया आ रावणकेँ लंकामे भेल छेलै मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे अयोधियामे जन्म नेनिहार सभ भगवान रामे हेता आ लंकामे जन्म नेनिहार सभ रावणे हएत। ओ तँ परिवार विशेषमे बेकती विशेषक बात ने भेल।"

सग्गालालक बात सुनि मुहसँ खसि पड़ल- "हँ, से तँ भेबे

---

[13] झूला

कएल।”

विचारक सह पबिते सग्गालाल बाजल-

“भाय साहैब! ओना, राम-रावणसँ हमरा कोन मतलब अछि, मतलब एतबे रखने छी जे सालो भरि–माने तीन साए पैंसैठो दिन–जेही हाथसँ कमाइ छी, तेही हाथसँ खेबो करै छी। माने ई जे जे हाथ काजमे लगैए ओही हाथक मुट्ठीमे खोरिसो अबिते अछि।”

सग्गालालक विचारकेँ दुनियाँमे वौआइत देखि बजलौं-

“सग्गालाल, गाममे सभसँ बेसी गोटी लाल तोरे छह।”

‘लाल गोटी’ सुनि सग्गालालक मनमे ठहकल। ठहकल मने ठनठनाइत सग्गालाल बाजल-

“भाय साहैब! बारहो मास आ तीन साए पैंसैठो दिनकेँ दू टुकड़ीमे बाँटि नेने छी, माने सालो भरिकेँ छअ-छअ मासमे बाँटि छअ-छअ मासक दूटा काज पसाइर नेने छी। जइमे सभ दिनक काजो बनल रहैए आ जीबैले आमदनियोँ बनले रहैए।”

सग्गालालक विचार मनकेँ उत्प्रेरित केलक मुदा नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं जे सग्गालालक जिनगीक हिसाब की अछि। बजलौं-

“से केना सग्गालाल?”

जहिना न्यायालयमे ओकील, अस्पतालमे डॉक्टर, कौलेजमे प्रोफेसर पूर्ण तैयारीक संग प्रवेश करै छैथ तहिना सग्गालाल अपन अखियासी जिनगीकेँ सहियारैत बाजल-

“भाय साहैब! गाम छी, सभकेँ सभ जनिते छिऐ जे किनका केते खेत-पथारक संग बास-अगबास छैन।”

बिनु विचारनहि मुहसँ खसि पड़ल- “हँ! से तँ गामक नक्शामे

खेतक नक्शो बनले अछि आ कर्मचारी ऑफिसमे खतिआनो रहिते अछि।"

बिच्चेमे सग्गालाल बाजल-

"भाय साहैब, आब तँ नव ढंगसँ बारहो मास पियाजक खेती हुअ लगल अछि मुदा हम पुरने ढाठीसँ करै छी।"

बजा गेल-

"से किए?"

सग्गालाल बाजल-

"अपनेसँ किताब पढ़ि कोनो बात जँ बुझियो लेब तैयो ओकरा क्रिया रूप दइमे, माने नीक जकाँ करैमे केते रंगक बाधा भइये जाइए, तँए जेकर अनुभव–आदैत–बनि गेल अछि ओ असान बुझि पड़ैए आ करैमे मनो लगैए।"

सग्गालालक विचार जेना मनमे मोहैन चला देने हुअए तहिना गोल-गोलाइत मुहसँ खसल-

"बाह..!"

'बाह' सुनि सग्गालालक मन श्रद्धासँ पसिज गेलइ। बाजल-

"भाय साहैब, एक्के बीघा अपना खेत अछि। ओहीमे सालो भरि लगलो रहै छी आ गुजरो कइये लइ छी।"

ओना, मनमे बुझैक अनेको प्रश्न उठए लगल मुदा बिच्चेमे मन कहलक- अपने ने टहलैले विदा भेल छी मुदा सग्गालाल तँ काजे लागल रहैए। काजक लोककेँ बाधित करब अपराधक श्रेणीमे आबि सकैत अछि। मुदा ओ तखने ने औत जखन बेवहारिक रूपमे कियो ग्रहण करए चाहैत हुअए। से अपने छी नहि...। बजलौं-

"सग्गालाल! एक गाममे रहितो अखन तक तोरा हम चीन्ह

नइ पेने छेलियह। जेतेक चीन-पहचीनक खगता अछि ओ केना पूरत, तँए दोसर-तेसर दिन फेर मुँहमिलानी करब। अखन ओते समैयो ने अछि जे तोरासँ पुछि सकबह जे पियाजक खेतीसँ आमदनी केना-केना होइ छह।”

अपन व्यस्तता देखबैत सग्गालाल बाजल-

“भाय सहैब, असगरे हमहूँ भरि दिन खेतेमे रहै छी। तँए गप-सप्प करैले अपनो मन उबियाइत रहैए, मुदा खेतीकेँ दुइर होइ दुआरे ओकरा ओगइर कऽ रहए पड़ैए।”

सग्गालालक बात सुनिते विचारक संग परिस्थितिसँ जोड़ल अनेको प्रश्न सोझमे आबि-आबि ठाढ़ हुअ लगल मुदा लगले मन कहलक-

“सगा-सम्बन्ध तँ तखने ने बनि सकैए जखन सगोक संग सगे-सम्बन्ध होइ।”

❑ शब्द संख्या : 1530, तिथि : 20 अप्रैल 2019

गाछसँ नमहर फड़

दस दिनपर सहजलाल गाम पहुँचबे कएल कि कन्ना-रोहट कानमे पड़ए लगलै। ओना, सहजलालकेँ छेलै जे दस दिनपर गाम एलौं हेन तँए पहिने सभ किछुकेँ–परिवारक क्रिया-कलापक संग वस्तु-जातकेँ–एक-एक नजैर देखि लेब आवश्यक अछि। दस दिनसँ परिवारक सभ किछुसँ सम्बन्ध हटि गेल छल आ पुन: जखन गाम एलौं आ सम्बन्ध बनाएब तइले ते सबहक दशा-दिशा देखि लेब आवश्यक अछिए। ओना, परवासक कारणे गामक प्रति सेहो सहजलालक मनमे उठिये रहल छेलै जे गामोमे किछु नबत-पुरनता भेले हएत। मुदा से सभ तँ देखला-सुनला पछातिये बुझि पएब।

मुदा तैबीच फेर कानमे कन्ना-रोहटक आवाज तेना सहजलालकेँ बेथीत केलक जे घरपर पहुँचैत-पहुँचैत एतेक बेसुध भऽ गेल जे अपन सभ किछु बिसैर पत्नीसँ पुछलक-

“कथीक कन्ना-रोहट छी?”

कन्ना-रोहटो तँ रंग-रंगक होइते अछि। कियो दुखे कन्ना-रोहट करैए तँ कियो सुखे सेहो करिते अछि। कहब जे से केना? सुनैक कोन गप, सभ कियो देखिते छी जे केकरो बिआह नइ होइए तँए कनैए, माने जीवन-संगी नइ भेटने कनैए आ कियो साँठ-उसारक संग सासुर जाए लगैए तखनो तँ कनिते अछि। मुदा से सभ नहि, असल कन्ना-रोहटोक अनेको कारण सेहो अछिए। कियो कमासुत मरि गेने कनैए तँ कियो खटासुत मरि गेने सेहो कनिते अछि। कियो

गाछपर सँ खसि हाड़-पाँजर तोड़ि कनैए तँ कियो हवा-जहाजपर चढ़ितोकाल खसि मरबो करैए आ कनितो तँ अछिए। खाएर जेतए जे होइए से तेतए होइए। ऐठाम सुनरलालक पचीस बर्खक जेठ बेटा- कुरूपलालक मृत्युक कन्ना-रोहट छी। पाँच साल पहिने कुरूपलाल बी.ए. पास केने छल। समाजक सइयो मुँह कुरूपलालकेँ होनहार नवयुवकक असीरवाद दऽ चुकल छेलइ।

एक दिस सहजलालक दस दिनक प्रवासकेँ सजनी देखि रहल छेली, तँ दोसर दिस पतिक चेहरापर दस दिनक बाहरी काजक थकानो देखिये रहल छेली आ तेसर दिस समाजक बीच पचीस बर्खक नवयुवकक मृत्युक कन्ना-रोहटक झड़ सेहो पड़िये रहल छेलैन। मुदा तैयो जी-जाँति सजनी बजली- “सुनरलालक बेटा कुरूपलाल मरि गेल! तेकरे कन्ना-रोहट भऽ रहल अछि।”

पत्नीक बात सुनि सहजलालक मनमे तेना ठाँहि-दे चोट लगल कि चानियेँ चनिया गेल। मनमे नाचि उठलै, बी.ए. पास केलाक पछाइत कुरूपलालकेँ जखन नोकरीक अभावमे जिनगी भार बनए लगलै तहियेसँ तन-मन तेना रोगाए लगलै जे दिनो-दिन खसिते गेल। वेचाराक शरीर दिनो-दिन खिन्न हुअ लगल आ अन्तो-अन्त मरिये गेल! ओना, चारू दिससँ मन थाकल-ठेहियाएल रहबे करै जइसँ विचारोक क्रिया थकथकाए लगलै, तँए मनमे नहि उठि सकलै जे स्वजीवी आ परजीवीक विचार करैत। की गुलाम देशमे सामान्य नागरिक नइ बसैए सेहो बात नहियेँ अछि, बसिते अछि। अपनो सबहक बाप-दादा हजारो बर्ख ऊपरेसँ गुलामीक जिनगी जीबैत एला अछि। देशवासीकेँ जहिना अपन-अपन वसबक अधिकार देशमे अछि तहिना ओकर सेवो करब तँ कर्तव्य अछिए। एहेन तँ नहि जे आन्हरक बिआएल महींस देखि डिठरा डाबा लऽ कऽ दौड़इ...।

कुरूपलालक मृत्युक भय जेना सहजलालक मनमे सन्हिया-सन्हिया घर करए लगलै। सन्हियाइक कारण भेलै जे अखन तक लोकक मुहेँ जे सहजलाल सुनै छल जे दस-दस हजार बरख धरि पहिलुका लोक जीबै छला, तही आशामे अपनो मन टँगल छेलै, मुदा जखन पचीस बर्खक नव युवकक मृत्युक कन्ना-रोहटक आवाज कानमे झरझरेलै कि भकुआएल मनक भक्क खुजलै। भक्क खुजिते हाँइ-हाँइ कऽ दुनू तरहत्थीकेँ सहजलाल अपने तरहत्थीपर रगैड़-रगैड़ दुनू आँखिकेँ पोछलक। आँखि पोछिते सहजलालकेँ अपन उमेर मोन पड़ल। पचासक टपान टपि पचपनक बीच अपनाकेँ पबैत अपन उमेरक संगी सभकेँ गाममे ताकए लगल तँ रामलोचनपर नजैर पहुँचलै। दुनू आँखिसँ देखिते सहजलालक सोझमे जहिना जेठ तहिना छोटक ओ दृश्य आबए लगल जइमे झहुरा-झहुरा होइत मरितो देखलक आ जीवितो देखलक।

पचीस बर्खक कुरूपलालक मृत्युक समाचार 'पत्नी-मुहेँ' सुनिते सहजलालक मनमे ओहिना ठाँहि-दे लगल जहिना क्रोंच पक्षीकेँ लगिते वाल्मीकि आगूमे आबि धाँइ-दे खसल। सहजलालक मन तिलमिलाए लगल...।

सहजलालकेँ एको क्षण गाममे गमाएब जपाल जकाँ बुझि पड़ए लगलै। रस्ताक थकानो आ भूखो-पियास ओहिना हेरा गेल जहिना कोनो अन्होनी घटना वा अबिसवासू घटनाक समाचार कानमे अबिते हेरा जाइए। अपनाकेँ बेसम्हार[14] देखि सहजलाल पत्नीकेँ कहलक-

"जहिना आइ दस दिनसँ बाहर छेलौं तहिना एक दिन आरो बुझब। एक्को क्षण एहेन गाममे विलमब पहाड़ जकाँ बुझि पड़ैए।"

---

[14] मनक बेसम्हार

पतिक बात सुनि सजनी ओहिना विरहा-बोहिया गेली जेना रजनीक संग सजनी विरहाएल-बोहियाएल। सजनीक विरहाएल मनमे लोक लाज उठल। लाजक लेहाजकेँ जगबैत सजनी बाजल-

“लोक की कहत?”

‘लोक की कहत!’ पत्नीक मुहसँ सुनिते सहजलालक मनमे लाजक लेहाज स्वत: उठए लगल। लोक अपन लाज-लेहाज अपनो-ले आ समाजो-ले अपने ने गढ़ैए आकि ब्रह्माजीक ऐठाम हड़ताल करए जाएब जे हमरा ‘लोक लेहाज’ गढ़ि दिअ...। अपन मनक शक्तिकेँ सहजलाल सक्कतसँ बान्हिये रहल छल कि मनमे विचार एलइ। विचार ऐबते बाजल- “लोकक लाज हमरा नइ होइए जे लोक की कहत। जँ एक्कोटा मनुक्खक निर्माण मनुक्ख अपन कीर्ति धर्म मानि पूर्ति कऽ लेत तँ ओ लोक-लाजसँ जरूर ऊपर हएत।”

सजनी- “से लोक बुझत? जँ बुझबो करत ते मानत थोड़े।”

मुस्की दैत सहजलाल बाजल- “से हम लोकसँ बुझियो लेब आ बुझाइयो देबइ। अहाँ कोनो चिन्ता नइ करू, बैंगनलाल हमर कौलेजिया संगी छी। पचीस बर्खसँ ऊपरेसँ भेँट नइ भेल अछि। ओतइ जाइ छी, काल्हि आएब।”

सजनी-

“पचीस बर्खक संगी बीचमे हेरा केना गेल छल आ तेकरा ऐठाम जे रहि कऽ काल्हि आएब से ओ रहए देत?”

पोचारा दैत सहजलाल बाजल-

“से सभ अहाँकेँ बुझैक कोन मतलब अछि। आ जँ मतलबे राखब ते संगीक ऐठामसँ घुमिकऽ अबै छी तखन एक-दोसरक संग तेसरोक बात बुझब।”

ओना, सजनीक मनमे सेहो उठि रहल छेलैन जे अखन पति थाकल-ठेहियाएल छैथ तँए बेसी नंग-चंग करब नीक नहियेँ हएत। तैबीच उठि कऽ सहजलाल विदा भेल कि मनमे उठलै- अखन रस्ता धड़ए विदाहे भऽ रहल छी, जँ कियो पुछता ते कहबैन जे जइ काजमे दस दिनसँ लागल छेलौं ओकर अन्तिम दिनक अन्तिम अंग पछुआएल अछि, तँए ओकरा पुराएबे ने अपन जिनगीक प्रथम भेल। जँ कियो भेँटे ने भेला तँ कहबैन हम बुझबे ने केलिऐ जे मृत्युक कन्ना-रोहट छी। किएक तँ कानसँ कन्ना-रोहट सुनलौं मुदा ई नइ बुझि पेलौं जे कन्ना-रोहटक रस-सुआद की अछि। गुणगर अछि कि चहटगर अछि आकि चोटगर अछि से बिना गमने बुझबो केना करब।

बैंगनक खेतमे बैंगनलाल बैंगनक फड़केँ निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि हिया-हिया देखिये रहल छल कि सहजलालपर नजैर पड़लै। सहजोलाल सहजे लाल छल, बाजल-

“संगी, तोहर बैंगन तँ गाछोसँ नमहर छह।”

अपन हाथक रोपल बैंगनलालक अपन गाछक ओ बैंगन छल जेकर लम्बाइ दू हाथ वा गज भरि-भरिक छै मुदा ओ ओहन गाछमे फड़ि रहल-ए जइ गाछक खड़ाइ गजोसँ कम अछि।

सहज होइत बैंगनलाल बाजल- “संगी, तीन पीढ़ीसँ एक कीर्ति केने एक जिनगी बनल आबि रहल अछि, आजुक सीमापर अपने छी तँए अपन दायित्वो ऐछे जे अहिना बनल आगूओ चलए। यएह ने भेल जन्मजात जीवन।”

❑ शब्द संख्या : 1003, तिथि : 22 अप्रैल 2019

जिनगीमे जान आएल

तीन बजे भोरक कहियौ कि रातिक समयमे जहिना वृन्दावनक यमुना धारक कातमे ठाढ़, झुमकाबला फूलसँ लदल कदमक डारिक मचकीपर बैस दुनू बेकती राधा-कृष्ण एक-दोसरकेँ आस लगबैथ तहिना अपन उदीयमान भोरक जिनगीकेँ देखि दुनू बेकती–ज्ञानचन भाय आ अंजनी भौजी–एक-दोसरमे आस भरैक परियास कऽ रहल छेलैथ। दुनूक अविसबासू मन, अविसबासू मनक कारण जे अंजनी भौजी अपन अंजन भरल ऑंखिसँ माए-बापक आश्रयमे अपन आठ बर्खक अवस्थासँ लऽ कऽ बिआहसँ पहिलुका चेहराक रूप सौन्दर्यक संग मनक सौन्दर्यकेँ आजुक हरियाएल रूपमे देखए चाहैथ, जइसँ मनक सभ सपना सपने बनि सपनौती जकाँ बुझि पड़ैन, कल्पनाक ओ साकार रूप नहि बनि पबैन जइसँ मनक तृषित जगि तृस्ति आत्माकेँ तृप्ति भेटल रहितैन।

पैंतीस बर्खक ज्ञानचन भाय आ चौंतीस बर्खक अंजनी भौजी, भोरक पहिल पहरकेँ जगिते दुनू बेकती संगे जगि गेलैथ। ओछाइनपर पड़ल दुनू परानी, दुनियाँक पसरल अन्हारमे एक्को हाथ नहि देखि पबैथ, जेतबे दूर तक घरक इजोत[15] छल तेतबे दूर दुनू परानीकेँ किछु-किछु देखि पड़ैत रहैन। मुदा जे छल से छल, अंजनी भौजी अपन दुनू ऑंखिकेँ अपन दुनू तरहत्थीसँ मीड़ैत, बिझियाएल बीझकेँ छोड़बैत बजली- “अखन दिन अछि कि राइत?”

[15] घरक लालटेन कि बिजलीक

ओना, अखन धरिक जे विचारक बेवहारिक रूप दुनू बेकती ज्ञानचन भाइक बीचक छैन ओही स्तरक अनुकूल पत्नीक प्रश्न छेलैन। तँए ज्ञानचन भायकेँ अनसौंहाँत नइ लगलैन। तँए, सोहँतगर बुझि ज्ञानचन भाय बजला-

"जहिना प्रस्तावक शीर्षकक अतिरिक्त ओकर व्याख्या सेहो रहैए तहिना अहाँ 'राति-दिन' कहि शीर्षक तँ ठाढ़ केलौं मुदा जखन आगूक व्याख्या करबै तखन ने सुनला पछाइत किछु जवाब देब।"

ओना एकभग्गू लोक अंजनी भौजी छथिए तँए बुझाएबो कठिन। तहूमे केकरा कहाँक मुहेँ सुनि नेने छेली जे 'जखने जागी तखने परात' माने पराते भेल दिनक पहिल अवस्था। बजली-

"कानमे ठेकी ने ते लगि गेल अछि जे सुनियौं कऽ अनठबै छिऐ। परबा-पौरुकी भोरे उठि बजैत-झकैत संगीक संग घरसँ निकैल गेल। कौओ कुचरिये रहल अछि आ एकरा हम राति कहियौ।"

ओझराएल बात तँ अछिए जे एक दिस देवालयमे भोरक पट खुजि घड़ीघन्ट बजल आ दोसर दिस मनोरम अवसर देखि अनेको रंगक अपराध सेहो होइते अछि। राइतिक अन्तिम पहर कहबै तखन तँ बारह बजेक सीमाने टुटि जाएत। तखन दिन-रातिक फसाद अनेरे ने फँसत।

..सामंजस करैत ज्ञानचन भाय अपन सुखाएल जिनगीक विचारधाराक बीच टुटल मने बजला- "जहिना दिन तहिना ने रातियो होइते अछि। ओ तँ समय छी, जे अपना गतिये चलैत करखनो दिन बनि चलैए तँ करखनो अन्हार बनि सेहो झझाइत चलबे करैए।"

पतिक विचार अंजनी भौजी नीक जकाँ नहि बुझि पेली।

ओना, ज्ञानचनो भाय आ अंजनियो भौजी पति-पत्नियेँ छैथ तँए एक परिवारक जीवन रहने सुखो-दुख संगे भोगबे करै छैथ मुदा दुनूक विचारक दुनियाँ अपन-अपन रहने सुखो-दुखक भोग समान नहियेँ छैन। तेकर कारण छैन जे एक दिस जहिना ज्ञानचन भाय जिनगीक थपेरकेँ बेवस्थाक[16] करामात बुझि अपना जिनगीकेँ दुनियाँक बीच अँटावेश करैत चलि रहल छैथ, तँए मनमे कौलेजिया जीवनक संग पति-पत्नीक बीचक जीवन-लीला मनसँ मेटा गेल छैन सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो छैन्हे। मुदा जहिना लोक कालक आगू बेवस भऽ जाइए तहिना ज्ञानचनो भाय बेवस भऽ गेल छैथ। दुनू बेकतीक जिनगी जे छैन से तँ छैन्हे मुदा मनमे नमहर-नमहर सपनो तँ छैन्हे।

बी.ए.क विद्यार्थी जखन ज्ञानचन भाय छला तखन अंजनीक संग बिआह भेलैन। दुनियाँक देखा-देखीसँ ज्ञानचन भाइक मनमे एतेक बिसवास तँ बनले छेलैन जे बी.ए. पास केने जहिना हाइ स्कूल तकक शिक्षक बनै छैथ तहिना शिक्षण संस्थानमे ऊपर-सँ-ऊपर तकक सेवा करैक क्षमता अछिए, तैसंग ऑफिसमे सेहो अफसर तकक शिक्षा प्राप्त कइये रहल छी...। तँए विद्यार्थी जीवन तक कोनो विद्यार्थीक मनमे वा ज्ञानचने भाइक मनमे किए कोनो हलचल उठितैन। रंगीन दुनियाँक रंगीन विचार सबहक मनमे रहिते अछि।

एक तँ समयानुसार बी.ए.मे पढ़ैत ज्ञानचन भाय, तैपर सुडौल चेहरा-मोहरा[17] सुनि अंजनीक मनमे तृप्तिक वादल उमड़बे कएल छेलैन। पनरह बर्खक बीचक बीच जे दुनू परानी—ज्ञानचनो भाय आ अंजनियो भौजी–क दिन-दुनियाँ रहलैन ओ ओहन भऽ गेलैन जे

---

[16] सामाजिक धारा

[17] हाथ-पैरसँ स्वस्थ

लोकक बीच मुँह उठबैबला नहि। तेकर कारण भेलैन जे जहिना पनरह बर्खसँ नोकरीक पाछू वौआइत कोनो नवयुवकक परिवारमे होइ छइ। तैबीच दुनू बेकतीकेँ सेहो परिवारमे वृद्ध माता-पिताक सेवाक संग मृत्यु-सज्जाक सेवा होइत श्राद्ध-कर्मसँ उद्धार[18] होइत अपन तीन सन्तानक सेवा धरिक जिनगीक बीच गुजरने अपनो चेहरा-मोहराक रूपमे वृद्धपनक सभ सिरखार झलैकिये रहल छेलैन।

संजोग बनल। मास दिन पूर्व, अन्हरिया रातिक अन्हारक बीच जखन उमड़ैत-घुमड़ैत वादल बरिसैले लटैक कऽ निच्चाँ उतरैए आ समय पेब बरिसए लगैए आ तइ बिच्चेमे जहिना बिजलोका चमैक सभ अन्हारकेँ पछारि क्षणिक प्रकाशितो करैत रहैए तहिना जिनगीक मुइल माटिक थाह ज्ञानचन भायकेँ भेलैन। अथाह पोखैर वा अथाह धारमे थाह लइकाल जहिना थहवाल निच्चाँ उतैर पैरसँ माटि छुबए चाहैए आ छुबाइते जेना थाह पेब लइए तहिना ज्ञानचन भायकेँ सेहो भेलैन। अपन जिनगीक धरतीपर पएर रोपिते ज्ञानचन भायकेँ मनमे जगलैन जे अखन धरि लहास जकाँ जिनगीकेँ कन्हेठने एलौं, जे जिनगी आरो भारी बनैत गेल। तँए जाधैर जिनगीमे जान नइ फूकब ताधैर ओ ओहिना मरणशील बनल रहत।

ज्ञानचनसँ अलग विचार अंजनी भौजीक छेलैन। ओ अपन परिवारक सभ बिपैतकेँ भगवानक सिर मढ़ि अपन पल्ला जहिना सभ झाड़ि लइए तहिना अंजनी भौजी सेहो सोल्होअना बुझै छेली। भलेँ कियो ओइ पल्लाकेँ नीक जकाँ बुझैत हौथ वा नइ बुझैत हौथ।

जहियासँ ज्ञानचन भाइक मनमे एलैन जे जिनगीमे जान आनी, तहियासँ विचारक धरतीक संग क्रियागत धरती सेहो धीरे-

---

[18] आर्थिक क्रममे उद्धार

धीरे सुगबुगा-सुगबुगा जागए लगलैन। जइसँ अपन ओकातिक अनुकूल अपनाकेँ अपन धरतीपर पएर रोपि पूर्ण स्वतंत्र रूप पकड़ै पाछू जी-जानसँ लगि गेला।

मास दिन पूर्व जगल ज्ञानचन भाइक जिनगीक जान प्राण रूपमे अपन शक्तिमे प्राण अनलकैन। प्राण अबिते ज्ञानचन भाय अंजनी भौजीकेँ जहिना जामवंत हनुमानजीकेँ अपन शक्तिक पहचान करौने रहैन तहिना चिन्हबैत बजला- "दुनियाँकेँ दुनियेँ किए, अपन सर-समाज, अपन गाम-घर, अपन देश-कोस इत्यादि सभकिछु देखिये रहल छी, तैबीच केना अपन बास हएत से तँ अपने ने बुझि बिचड़ी करए पड़त।"

अपना जनैत ज्ञानचन भाय जिनगीक सारतत्त्वमे अर्थात् जीवनक मूल आवश्यकतामे एक तत्त्वक बात जरूर बजला, मुदा अंजनी भौजीक सुखराह मनमे ओतेक बिसवास नइ भेलैन जेतेक बिसवासक संग कियो हाथ-पएर उठा अपन जिनगी-ले आगू उठबैए। मुदा तैयो अंजनी भौजी पतिकेँ जीवन रक्षक बुझि बजली-

"हमर माए-बाप जखन अहाँक हाथ पकड़ा दान स्वरूप संग धरा देलैन, आब तँ ओ सहजे ऐ दुनियाँमे नइ छैथ, तखन तँ अहीं ने... ।"

पत्नीक बात सुनि ज्ञानचन भाय बुझि गेला जे सोल्होअना पत्नी ओंगठल छैथ। मुदा अहूठाम तँ विचारणीय बात अछिए जे कोन रूपेँ ओंगठल छैथ? एक तरहक ओंगठब होइए जे सोल्होअना पतिक कपार चाटब। जहिना भगवानपर बिसवास करैत लोक अपन सिनूर-टिकुलीक भार सेहो हुनकेपर सुमझा दइ छैन तहिना कपार चाटैक माने भेल जे उपारजनक सोल्होअना भार पतिपर रहल आ पत्नी सासुरक पाहुन जकाँ रहती। दोसर तरहक होइए जे

अपनाकेँ मनुक्खक शकल-सूरतमे देखि पतिक जिनगीमे अर्द्धांगिनी बनि अपनाकेँ स्थापित करब। आ तेसर तरहक ओ भेल जे पतिक संगिनीसँ आगू बढ़ि पतिकेँ अपन संगी बनबै छैथ।

अंजनी भौजीक अपन जिनगीक टुटल आसक-पाशमे आस लगबैत ज्ञानचन भाय बजला- “देखू, अखन तक हमहूँ भ्रममे छेलौं तँए जिनगीकेँ अख्यिाइस कऽ अखिआस नइ कऽ सकलौं, मुदा दुनियाँ जहिना देखा-देखीक अछि तहिना सीखा-सीखीक सेहो अछिए।”

बिच्चेमे मुड़ी डोलबैत अंजनी भौजी बजली- “एकरा के काटत, ई तँ अछिए।”

पत्नीक सह-मे-सह दैत ज्ञानचन भाय बजला- “जखने देखा-देखीसँ सीखा-सीखी हुअ लगैए तखने जिनगी अपन जी-मे-जान आनि जीबा-जीबीक खेल खेलबे करैए।”

पतिक विचार सुनि अंजनी भौजीक पथराएल मनमे कोदारिक चोट जकाँ ठाँहि-दे लगलैन। जइसँ बेसुध भऽ गेली।

गुम-सुम भेल अंजनी भौजीकेँ देखि ज्ञानचन भाय बजला-

“भोर भऽ गेल। जे अन्हार देखै छिऐ ओ भोरक अन्हार छी, जे पह फटैत-फटैत अपने फाटि जाएत।”

जहिना कोनो रोगसँ आक्रान्त रोगीकेँ नान्हियोटा कारण भयावह बुझि पड़ैए तहिना अंजनी भौजीक मनमे सेहो होइत रहैन। मुदा तैयो बाँहि पकैड़ ज्ञानचन भाय अंजनी भौजीकेँ ओछाइनसँ उठा दुनियाँक समरभूमि दिस विदा भेला।

❑ शब्द संख्या : 1198, तिथि : 25 अप्रैल 2019

जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै

“अन्हार घर साँपे-साँप आकि फूले-फूल” ई आइये नहि, बच्चेसँ सुनैत एलौं हेन। समाजक बीच अखनो विचारक चलैनमे अछिए भलैं ओ बेवहारमे केते दूर तक अछि से नहि गमि पाबि रहलौं हेन। खाएर जे अछि। आजुक परिवेशमे जे शहर-बजार ग्रामीण युवा पीढ़ीकेँ आकर्षित कऽ रहल अछि ओहो तँ अन्हारे घर जकाँ अछि। माने अनभुआर जगह। मुदा अपनो मनक उठाइन आ परवासियो मुँहक बात सुनि विचारमे संक्रमण भेने एकरूपता आबिये गेल अछि, जेकर फलाफल सोझहेमे अछि। ओना, जइ हिसाबसँ लोकक पड़ाइन गामसँ शहर दिस भऽ रहल अछि तेकर एक्केटा कारण नहि, अनेको कारण अछि। किछु मूल कारणमे, अपना ऐठामक भू-सम्पैतिक जे इतिहास रहल ओ बहुसंख्य लोककेँ अर्थहीन बनौलक जइसँ जिनगीक मूल आवश्यकतामे भोजनोक भरपाइ नीक जकाँ नहि भऽ पाएल। वस्त्र, रहैक घर आ शिक्षा-स्वास्थ्य तँ दूरक बात भेल। ओना, पाबैन-तिहारमे भूखो मेटबैक अभ्यास लोक कइये नेने अछि, माने उपास करैक अभ्यास। दोसर, भौगौलिक बनाबट जे अपना सबहक अछि ओ धार-धूर, बरखा-बाढ़िक इलाका अछिए। एक दिस बंगालक खाड़ीसँ उठल वादल बरखा बरिसबैए तँ दोसर दिस उत्तरी भागक पहाड़पर बर्फक जन्म सेहो होइते आबि रहल अछि जे दुनू पाइनिक जन्म स्थान छीहे। दुनू पाइनिक एहेन कटान-खोंटान अछिए जे बाढ़िक भयंकर रूप बना

गामक-गामकेँ उजाड़िते रहल अछि। खाएर ओकरो बहुत कारण अछि। मुदा से सभ नहि। हो-हामे देवशंकर कलकत्ता चलि गेल। आब तँ कलकत्ता बदैल कऽ कोलकाता भऽ गेल अछि मुदा जइ दिनमे देवशंकर कलकत्ता गेल तइ दिनमे 'कलकत्ता' 'कलकत्ते' छल 'कोलकाता' नइ बनल छल।

'हो-हा'क माने भेल कलकत्तामे नोकरी-चाकरी केनिहार जखन दस-बीच आदमीक बैच बना-बना जाइ छला हुनके सबहक देखा-देखीमे जाएब। भाय! कियो गाममे रहि शरीर धुनए वा शहरमे धुनए, मुदा जखने शरीर धुनकीपर चढ़त तखने जीवन गतिशील हेबे करत आ जखने जीवनमे गतिशीलता औत तखने जानक आगमन सेहो हेबे करत। एहेन विचार देवशंकरक मनमे साल भरि कलकत्तामे रहलाक पछाइत भेल। कलकत्ता जाइसँ पहिने नहि भेल छल। ओना, देवशंकर बिनु चोरीक बी.ए. पास ग्रेजुएट अछि। किए तँ ने ओ कहियो कोनो परीक्षक-ऐठाम डाली पहुँचेलक, ने चिट-पुरजीसँ प्रश्नक उत्तर लिखलक आ ने विश्वविद्यालयक ऑफिसक किरानी बाबूकेँ भोज-भात खुऔलक। अपना बुधि-बाँहिक बले बी.ए. पास केने अछि।

कलकत्ता पहुँच देवशंकर अपन गौंआँ-घरूआक संग एक दिन धरमतल्लाक ओइ मुँह-कान झड़लाहा धरमशालामे रहल, जइमे गौंआॅ-घरूआ सबहक अड्डा छेलइ। एक्के दिनक कलकत्ताक जिनगी देवशंकरक विचारकेँ झकझोड़ि देलक। किए तँ कलकत्ताक सड़कपर रिक्सा चलौनिहार, कलकत्ताक रिक्सा टमटम जकाँ मनुक्ख खिंचैए, ठेला चलौनिहार, बोरा उघनिहारक संग अनेको रंगक वृत्तिसँ बहरबैया[19] आवृत्ति छथिये। तँए कहब जे ऑफिस कि

[19] कलकत्ताक बहरबैया

शिक्षण संस्थान आकि कल-कारखानामे बहरबैया लोक काज नइ करैए सेहो बात नहियेँ अछि।

सात बजे भिनसुरका समय। देवशंकरक मन उत्साहसँ भरल उत्साहित छेलैहे। उत्साहितो केना ने रहैत, अपन बाँहि-बल कर्म दिस उन्मुख करैले जाएत। किछु मास पूर्व महल्लेक एकटा कृषि कौलेजक प्रोफेसर तनुकलालकेँ कहने रहथिन जे एकटा आदमीक खगता अछि। धर्मशालोक सभ जहिना बुझैत जे तनुकलाल नोकरीक जोगारी लोक छथिए तहिना जिनका नोकरक खगता होइ छैन ओहो सभ तनुकलालकेँ जनिते छैन। जइसँ तनुकलाल दस-दुआरी लोक बनियेँ गेल छैथ। कियो प्रणामो करै छैन तँ कियो गारियो तँ पढ़िते छैन। दुनूक अपन-अपन जगह अछि, जैठाम काम-चोर नोकरक प्रवेश करा दइ छथिन तैठाम गारि सुनब उचिते भेल। मुदा ऐमे तनुकलालक कोन दोख। ओ की कोनो चानीक रुपैआ जकाँ औंठापर टनटना कऽ केकरो देखै छैथ। आकि मनुक्खक मुँह-कान देखि बुझै छैथ।

देवशंकरकेँ सोर पाड़ि तनुकलाल लगमे बैसा कहला-

“बौआ! कलकत्ता छिऐ, ऐठाम लोक दू पाइ कमाइ-ले अबैए तँए काजक नीक-बेजाए नहि सोचि श्रम करैए आ दूटा पाइ देखैए।”

अखन तक जे देवशंकरक अनुभव छल ओ ओहन छल जे, जे पढ़ल-लिखल लोक छैथ ओ स्कूल-कौलेज वा कोनो ऑफिसमे लिखा-पढ़ीक काज करै छैथ आ जे पढ़ल-लिखल नइ छैथ ओ कल-कारखानासँ लऽ कऽ रिक्सा-ठेला चलबै छैथ, तँए जखन पढ़ल-लिखल (बी.ए.पास) छी तखन हमरो कोनो ओहने काज हएत। ओना, एक्के दिनक मेहनतक जिनगी–रिक्सा, ठेला, भारपर

पानि उघनिहार, गोदाममे बोरा उघनिहार, सड़कक नाला साफ केनिहार, सड़कपर झाड़ू देनिहारक जिनगी देख–देवशंकरक मनमे एते बिसवास जगिये गेल छल जे जेते मेहनत केलाक पछाइत जेते पाइ लोकक हाथमे अबैए ओते मेहनत जँ लोक अपना-ले अपन समर्पित जिनगी बना करत तँ ओइसँ बेसी उपारजन कइयो सकैए आ करितो अछि। भलेँ श्रम लेनिहार श्रमक अनुकूल ओकरा मजूरी दइ वा नइ दइ। देवशंकरक विचारमे बदलाव आबिये गेल जे जखन कमाइ-ले कलकत्ता एलौं हेन तखन जे काज भेटत से करब। जखन मनुक्ख छी, हाथ-पएर अछि, देहमे बुत्ता अछि तखन काज किए ने कएल हएत। देवशंकर बाजल-

"हम तँ कलकत्ता लेल नव छी, तत्काल तँ केतौ ठौर पकड़िये लइक अछि, पछाइत बुझल जेतइ।"

तनुकलालक संग देवशंकर घोसबाबूक ऐठाम पहुँचल। गामक सुखी सम्पन्न परिवारक घोसबाबू, जे गामसँ कलकत्ता शहरक धर्मतल्ला मोहल्लामे अपन घर बना रहि रहल छैथ। ओना, गाममे पिताकेँ नीक किसानक प्रतिष्ठा छेलैन मुदा घोसबाबू एग्रीकल्चरक डिग्री लेला पछाइत कृषि कौलेजमे प्रोफेसर बनला। शोधक पछाइत डॉक्टरो बनला। मुदा जे बनला तइसँ बेवहारिक रूपमे हटल रहला।

मात्र चारि गोरेक परिवार घोसबाबूक। दूटा बच्चा, जे हाइ स्कूलमे पढ़ैए आ दुनू परानी अपने। असलमे घोसबाबूकेँ नोकरक खगता परिवारमे नइ छेलैन, मुदा गप-सप्प करैले एकटा अनठिया[20] आदमीक खगता छेलैन्हे। दिन-राति दुनू परानियेँ केते गप करता, ओइसँ मन थोड़े भरतैन। तँए नोकरक खगता छेलैन।

---

[20] अनठिया माने अनभुआर लोक जेकरा कम जानकारी छै

बिना दरमाहा तय केनहि देवशंकर ओइ शर्त्तपर नोकरी रहि गेल जे काजक अनुकूल वेतन दइक आश्वासन घोसबाबू दए देलखिन।

साल भरि देवशंकर तेतेक खुशीसँ रहल जे ने कहियो घोसबाबूसँ दरमहेक चर्च केलक आ ने घोसेबाबू कहियो दरमाहाक विषयमे पुछबे केलखिन। दुनूक अपन-अपन सोच-समझ, तँए अपन समझदारीसँ जीवन-गुजारिये रहल छला। घोसबाबू जिनगीक अपन आश बना, माने एकोटा अज्ञानकेँ जँ सज्ञान बना धरतीपर ठाढ़ कऽ देब तँ ओ ज्ञान मरत नहि, भलेँ समय पेब कहियो मोटा जाए वा कहियो दुबरा जाए। तँए देवशंकरकेँ नोकर नहि बुझि एक मनुक्ख बुझि, अपन ज्ञानार्पण कऽ रहल छला। दोसर दिस देवशंकरक सोच ई छल जे जखन स्कूल-कौलेज जकाँ पढ़िये रहल छी तखुनका दरमाहा स्टाइपेन भेल जइमे रहैक घर आ खाइ-पीबैक सभ किछु भेटिये जाइए। तखन दरमाहा बाँकिये की रहल जे मंगबैन वा कहबैन।

देखा-देखी साल बीति गेल। बाप-दादाक अर्जित जे सम्पैत देवशंकरकेँ अछि ओइ सम्पैतिक मूल्यकेँ देवशंकर बुझि गेल। बुझि गेल जे जइ काज[21]क पाछू लोक गामसँ शहर भागि रहल अछि, ओ काज गाममे एते पसरल अछि जे देखिते छी जे पाँच हजार आबादीबला गाममे एकटा डॉक्टर नहि अछि। हजारो बीघा जमीनबला गाममे कृषि वैज्ञानिक नहि अछि, शिक्षाक वएह दशा अछि जे जेते विषयक पढ़ाइक खगता गाममे अछि ओकर अधो-चौथाइ नहि अछि। तहिना जे कोनो ग्रामीण सम्पदा अछि ओकरो वएह गति अछि। ओ गतिशील भऽ गतिमान केना बनत मूल प्रश्न

[21] रोजगारक

अछिए।

गाम अबैक विचार देवशंकर केलक। परदेशीक एकटा सीमा सालो छीहे। घोसबाबू असिरवाद दैत देवशंकरकेँ कहलैन-

“बौआ! निर्भय, निर्भीक बनि अपन जिनगीक चढ़ावमे लगि जाउ। कियो नीक बुझि संगो देत आ कियो अधला कहि दुतकारबो करत।”

निर्भीक भऽ देवशंकर बाजल-

“जे संग नइ चलत, ओकर संग हमहूँ नइ चलबै।”

❑ शब्द संख्या : 1080, तिथि : 26 अप्रैल 2019

चौरस खेतक चौरस उपज

पार्लियामेन्टक चुनावमे मात्र छबे मास शेष रहल। देशक महापर्वक आगमन भइये गेल। जनतंत्र देश अपन छीहे, ई हम ओहिना नइ कहलौं हेन। जेते जन अपना देशमे राजनीतिक पार्टीक कतारबन्दीमे अछि ओते दुनियाँक कोनो देशमे नहि अछि। जइ देशमे जनसंख्या कम छै ओ अनेरे पाछू भेल आ जइ देशमे बेसी छै ओइमे एते राजनीतिक पार्टीए ने छइ। हँ! ई दीगर बात जे कियो चाह-पानक पार्टी बुझैए तँ कियो गप-सरक्काक, तहिना कियो जाइतिक तँ कियो सम्प्रदायिक...। मुदा किछु छी, छी तँ राजनीतिके पार्टी किने। भलेँ किए ने लोक चुनावे-चुनावे अपन पार्टियो हेर-फेर करैत हुअए।

छह मास चुनावक रहि गेल अछि, बिना चुनावी माहौल बनौने पुन: दोहरा कऽ पार्लियामेन्ट पहुँचब भरिगर भइये जाएत, तँए किसानकेँ एक्केबेर किए ने दुगुना धनिक बना देल जाए जे देशो दोबर धनिक भऽ जाएत। किसानेक देश भारत आ किसानेक बेटा पार्लियामेन्टमे...।

अखुनका सरकारक पैछला साढ़े चारि बर्ख केना बीति गेल से ने सरकारे बुझलक आ ने जनते बुझलक। नवतुरिया सभकेँ सरकारक पेंचे-पाँच बुझै-गमैमे बीति गेलै आ प्रशासन तँ सहजे नगदे-नारायणक फेर-फार करैत हिसाब-बाड़ीक मुँह मिलानियेँमे रहि गेल। बँचल आम जनता, ओ तँ परचे-पोस्टरक मिलानी करैमे

गाम-सँ-ब्लौक आ ब्लौक-सँ-बैंक करैत रहि गेल। अही धुम-धरक्कामे साढ़े-चारि बर्ख बीति गेल। खाएर जे भेल किछु डुमा जाफर सभ तँ सरकार चलेबे केलैन।

ऐगला चुनावक माहौल बनबैले सौनक मेघ जकाँ सरकारक तड़तड़ाएल गर्जन ढनढनाएत-

“बाइस इस्वी तक किसानक आमदनी दोबर भऽ जाएत।”

दिल्लीक लड्डू जकाँ ऐठामक किसानो आ किसानक आमदनियोँ अछिए। देखिते छिऐ जे परीक्षामे जइ विद्यार्थीकेँ लड्डू नम्बर अबै छै ओ सभसँ तेज बुझल जाइते अछि।

तेजपुर गामक जुगुतलाल बाबा सम्पन्न तँ नहि मुदा एक-तरहक सुभ्यस्त किसान छथिए। दरबज्जापर बैसल असगरे जुगुतलाल बाबा समैयो आ सालोक लेखा-जोखा करैत रहैथ। घिरनी जकाँ मन चलैत रहैन, तँए करखनो मिथिलांचलकेँ तँ करखनो अपन जिला-जबारकेँ तँ करखनो अपन गामकेँ तँ करखनो अपनाकेँ देखए लगैथ। ने मन थीर होनि आ ने विचारे थीर भऽ पबैन। जखन मिथिलांचलपर नजैर जानि तँ देखैथ जे लाखो बीघा आमक गाछियो आ कलमो बाँझ भऽ गेल। केतौ आम फड़बे ने कएल। जमीनक साल भरिक उपज आम छी। सालक उपजा केते जमीनक नष्ट भऽ गेल..!

मुदा लगले जुगुतलाल बाबाक मन घुसैकियो जानि जे मिथिलांचल दू देशक मुद्दा अछि तँए अनेरे बेसी माथा-पच्ची करब नीक नहि। देखिते छिऐ जे दुनू देशक एक नमहर भू-भागक जहिना भाषा एक छी तहिना आरो-आरो बहुत चीज एकरंगाहे अछि। तैबीच भाषाक साहित्य एक-दोसराक बीच आदान-प्रदान हुअए से प्रतिवन्धित अछि। ने ऐ देशक ओइ देश जा सकैए आ ने ओइ

देशक ऐ देश आबि सकैए..!

फेर जुगुतलाल बाबाक मन ससैर कऽ अपन जिला-जबारपर आबि गेलैन। फलक नामपर ओना बहुतो फल अपना ऐठाम अछि मुदा से खाली गिनतीमे। असल फल अपना ऐठामक आमे छी। गाम-गामक जे सभसँ निरोग भूमि अछि–डीह जोग–ओहू जमीनक उपजा मरा गेल, मुदा तैयो भालूसँ किदैन करौने जहिना लोक फुफुआ जाइए तहिना ऐठामक किसान फुफुआइते अछि। मनमे छगुन्तो होनि आ तामसो उठैत रहैन जे अखन तक केतेक नोकसान किसानक भेल, एकर आकलन के करत। जेकरा भार छै ओकरा डोरा-डोरिये ने छै आ जेकरा डोरा-डोरि छै ओकरा मतलबे कोन...। लगले जुगुतलाल बाबाक मन अपनापर आबि अँटैक गेलैन।

अपन बात-विचार करैक मन जुगुतलाल बाबा बनाइये रहल छला कि दिग्विजय लाल आगूमे पहुँच टोकलकैन-

"गोड़ लगै छी, बाबा..!"

ओना, जुगुतलाल बाबाक मन अपन पाँच बीघा खेतमे बीघा भरि आमक गाछी रहने बीसे प्रतिशत अपन सालक उपज नोकसान देखैत रहैथ, मुदा मनक तामसक दोसरो कारण रहैन। दोसर कारण ई रहैन जे बीघा भरि जमीन फलक खेतीमे लगौने छी मुदा सालमे एको प्रतिशत फल ठोरपर नइ चढ़ल! मुदा जखन दोसर परिवारक दिग्विजय लाल पहुँच गेल अछि तखन अपने दुख-धन्धामे लागल रहब नीक नहि। तँए अपन बातकेँ तहियबैत जुगुतलाल बाबा बजला-

"नीक जकाँ जीबैत रहह, बौआ दिग्विजय। बहुत दिनपर देखलियह हेन। गामसँ कतौ बाहर गेल छेलह की?"

जहिना भिनसुरका मेघक कुहि फटिते सूर्ज भगवान अपन

अबल-धबल रूप देखबए लगै छैथ तहिना दिग्विजय लाल अपन असल रूप देखबैत बाजल-

“बाबा, लाजे अहाँ तक नइ अबै छेलौं।”

ओना, दिग्विजय लालक विचारकेँ आसु-तोष दैत जुगुतलाल बाबा हँसीमे लेलैन, मुदा मन तरैस गेल छेलैन जे ऐठाम–अपना देशमे–खाली दिग्विजये लालटा लाजक पात्र नहि, देशक किसानी जिनगी आ किसानो लाजक पात्र छैथ। लाजक पात्र ऐ मानेमे जे जिनका देशक सत्ताक दिशा निर्धारित करैक शक्ति छैन ओ अपने दिशाहीन भऽ गेल छैथ। जेना अष्टावक्रकेँ उत्तर दिशासँ सबाल-जवाब भेला पछाइत हुअ लगलैन...।

मुस्की दैत जुगुतलाल बाबा बजला-

“बौआ दिग्विजय, औझुका जुगमे तोरेटा मुहेँ लाज-लेहाज सुनलौं। आब कि लोक सोल्हमी सदीक रहल जे तुलसी बाबा जकाँ आकि कबीर बाबा जकाँ आरबन-कोपीन पहीरि अपन लाज-लेहाज निमाहत। आब तँ लाज-लेहाज शास्त्र-पुराणक बात भेल। लोक आब लोहाक मशीन बनि गेल अछि, तँए इज्जत-आवरूकेँ तेना नट-बोल्ट लगा कसिकऽ पकैड़ लेलक अछि जे धरतीक धुजा[22] अकासमे उड़ि रहल अछि।”

ओना, जुगुतलाल बाबाक विचार सुनि दिग्विजय लालक मन वास्तविक मनसँ मर्माहत भऽ गेल मुदा जखन अपनाकेँ समुद्रक एक बून पानि जकाँ बुझलक तखन मनक ‘तस’मे ‘इल्ली’ एलइ...।

अपन विचारकेँ चौरस करैत दिग्विजय लाल बाजल- “छअ-सात मासक अपन जिनगी कहै छी, बाबा।”

---

[22] पताका

समयवद्ध जिनगी सुनि जुगुतलाल बाबा सहमला। सहमैक कारण भेलैन जे जखने मनुक्ख अपन समयकेँ चीन्ह कऽ पकैड़ अपन जिनगीमे बान्हत, तखने ओकर भागक भाग फुटबे करतै। जुगुतलाल बाबा कहलखिन-

"बाजह।"

दिग्विजय लाल बाजल- "छअ मास पहिने किसानक मनमे उजाहि उठल। जिला कार्यालयमे कृषि सलाहकार सबहक बैसार भेल। बैसार दुनू पक्षक बीच रहै सरकारो आ आमोजनक बीच। ओहीमे एकटा वैज्ञानिक हिसाब जोड़ि-जोड़ि तेना ने कोबी-खेतीक हिसाब, फूलसँ लऽ कऽ बीआ धरिक जोड़ि कऽ बुझा देलैन जे मने उड़ि गेल। काजक मर्म बुझनिहारक मन ने काजक दौरमे सुतिया जाइए, मुदा से भेल नहि। दसो कट्ठा चौमासमे कोबीक खेती केलौं, दिन-राति ओगरैत रहलौं। मुदा...।"

'मुदा' सुनि जुगुतलाल बाबा चौंकैत बजला-

"मुदा की?"

दिग्विजय लालक मनक विचार टुटि-टुटि कऽ तेना झड़ि-झड़ि खसए लगल जे सुपुट बोलमे नहि निकैल थरथराइत आवाजमे निकलल।

जुगुतलाल बाबा तोषसँ तोपैत बजला-

"दिग्विजय! अपना सभ किछु छी तैयो जीवित मनुक्ख तँ छीहे।"

बिच्चेमे मुड़ी डोलबैत दिग्विजय लाल बाजल-

"एकरा के काटत, बाबा। जे काटत तेकर नाक काटि लेबइ।"

मुस्की दैत जुगुतलाल बाबा बजला-

“अपन चूक केतए बुझि पड़लह?”

दिग्विजय लाल-

“खेत चौरस नइ बना पेलौं तँए पटौनी-बेर खेती बिगैड़ गेल जइसँ उपजे डेढ़बरा भऽ गेल। घाटा भेल।”

जुगुतलाल बाबा बजला-

“जे जीबे से खेलए फागु। बुड़िबकहाक खेती ऐगला साल।”

❑ शब्द संख्या : 998, तिथि : 29 अप्रैल 2019

सिकिया नेता

आइ भोँट छी। भिनसर साते बजेसँ घर-अँगनासँ लऽ कऽ भोँटक बुथ धरि लोकोक आवाजाही आ चुनावी गहमा-गहमी हुअ लगल। अस्सी बर्खक सुधनी दादी अपन अँगनेसँ गरियाबए लगली-

“जो रे टिकजरौना! तोरा कहियो नीक नइ हेतौ।”

एते बात तँ बुझले छल जे सात बजेसँ भोँट खसब शुरू भऽ जाएत। बुथ दिस नहि जा, गाम दिस विदा भेलौं। बुथ दिस नहि जाइक मन ऐ दुआरे नइ भेल जे चुनावमे पुलिसक बेवस्था भरपुर अछि। केता खेप भोरसँ माने तीन बजे भोरेसँ पुलिसक गाड़ी गाममे चक्कर काटि चुकल अछि। जहिना एक दिस पुलिसक गाड़ी चक्कर काटि चुकल अछि तहिना गामक नेतो सभ केता खेप गाममे घुमि चुकल अछि। तहीकाल रविन्दर भायकेँ बुथ दिससँ अबैत देखलयैन। मनमे जहिना उत्साह बुझि पड़ल तहिना हतोत्साह सेहो बुझि पड़ल। मुदा तइसँ हमरा कोन मतलब। ई ‘उत्साह-हतोत्साह’ हुनकर अपन मामला छिऐन। हुनकेटा नहि, सबहक अपन-अपन मामला छीहे जे जिनगीमे केना उत्साहित भऽ जीब वा हतोत्साहित भऽ जीब...।

लगमे अबिते रविन्दर भायकेँ पुछलयैन- “भाय, बुथ दिससँ अबै छी?”

जहिना पुछलयैन तहिना रविन्दरो भाय बजला- “हँ।”

सातसँ समय ऊपर भऽ चुकल छल। सात बजेसँ भोँट खसब

शुरू हएत से बुझल रहबे करए। बजलौं- “भोँट खसा कऽ अबै छी?”

हमर बात सुनि रविन्दर भाय कनीकाल चुपे रहला। फेर की फुरलैन की नहि, बजला-

“नइ अखन भोँट कहाँ खसेलौं हेन। लोकक भीड़ दुनू बुथपर अछिए। जहिना कतार लागल भोँट खसौनिहारक भीड़ अछि तहिना गौंआँ-घरुआ सिखौनिहारक भीड़ सेहो अछि। तैसंग ऐ बुथसँ ओइ बुथपर पुलिसक गाड़ीक दौड़ौ-दौड़ी सेहो अछिए।”

ओना, रविन्दर भाय कोनो राजनीतिक दलक लोक नइ छैथ मुदा अपन दल नहि छैन सेहो बात नहियेँ अछि। अपन दल ऐ लोभहे बनौने छैथ जे जखन मनुक्ख छी, सामाजिक प्राणी छी तखन मनुक्ख आ जानवरक बीच भेदो तँ यएह ने अछि। तँए समाजक बीचे ने बास करैक अछि तइले तँ लोकक समूहक संग रहै पड़त। लोकेक समूह ने समाजो छी। अही लोभक दुआरे रविन्दर भाय समाजमे सक्रिय छैथ। सभ रंगक लोक समाजमे अछिए तँए सभधन्धी लोक रविन्दर भाय छथिए। केकरो बिआह-दानक लेन-देनक प्रश्न होइ कि श्राद्धमे पंचदान-विरखो क्रिया-कर्मक प्रश्न होइ आकि केकरो दुनू बेकतीक बीचक मतभेदक प्रश्न होइ रविन्दर भाय केना ओइ बीच नइ पड़ता।

पार्लियामेन्टक चुनाव छी। देशक भागक फैसला हएत। ओना, कोनो-कोनो राज्यमे विधान सभाक चुनाव सेहो छी आ खुदरो-खानि क्षेत्रक चुनाव सेहो छीहे। मुदा अपना ऐठाम से कम अछि। मात्र पार्लियामेन्टक चुनाव छी। मुँह देखि मुंगबा परसनिहार रविन्दर भाय छथिए, तँए मनमे भेल जे जँ भोँटक विषयमे पुछबैन तँ अनेरे वेचारे गामक झगड़ामे ओझरा जेता। असगर रविन्दरे भाय

की की करता। मात्रिक दिससँ कोनो पार्टीक सनेस ममियौत भाए पठौने हेतैन तँ सासुर दिससँ सार किनको सनेस पठौनहि हेतैन। तेतबे नहि, जाइतिक मैनजनक फरमान भीने हेतैन आ संगी-साथीक भिन्ने। मुदा सभ किछु रहितो रविन्दर भाय इमानदार लोकक गिनतीमे गनल जाइते छैथ। नवका कम्प्युटरक हिसाब तँ नहि पढ़लैन अछि मुदा देशी हिसाब पढ़ने एते तँ बुझिते छैथ जे गामक इमानदारीक तराजू पाइ-कौड़ीक छी, जेकर डण्टी केतौ हाथीक नाँगैर जकाँ बनि गेल अछि तँ केतौ पूछकट्टी बकरी जकाँ सेहो अछिए। अही बीच ने रविन्दर भायकेँ रहबाको छैन। ओना, रविन्दर भाय दुनू रंगक लोक छथिए। माने ई जे केकरो-ले हाथीक नाँगैर जकाँ छैथ, तँ केकरो-ले पूछकट्टी बकरी जकाँ सेहो छथिए। तँए कहब जे रविन्दर भाय ओहन बकलेल-ढहलेल जकाँ छैथ जे अपन असथिर विचार राजनीतिक प्रति नहि बना सकै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। बनाइयो तँ सकिते छैथ मुदा तइमे बाधो छैन्हे।

..बाधा ई छैन जे पार्लियामेन्टक क्षेत्र नमहर रहने अधिकतर नेताक घर–चुनाव लड़निहार–कने दूर-दूर छैन्हे जइसँ पहिले-पहिल बेर नामो सुनै छैथ, मुदा दू-तीनटा नेता लगक रहने चिन्हो-परिचय आ उचितो-उपकार होइते छैन। तँए जँ रविन्दर भाय अपन अ-असथिर विचार अपने जीवन आ अपन जीवनक उदेसकेँ देखैत जँ राजनीतिक विचारानुसार असथिरो करता तइमे बाधा ई छैन जे चिन्हरबो नेता आ उपकारियो नेता चुनावे-चुनाव अपन दल बदैल लइ छैन, जइसँ रविन्दर भाइक पार्टी सेहो बदैल जाइते छैन...। रविन्दर भायकेँ पुछलयैन- “भाय, भोँट खसबए करवन जाएब?”

रविन्दर भाय बजला- “आब एक्केबेर छअ-बजे साँझमे जाएब। छअ बजे तक भोँट अपना ऐठाम छी।”

रविन्दर भाइक 'छअ-बजे' सुनि बजा गेल- "आनठामक दोसर समय अछि?"

रविन्दर भाय बजला- "अखन औगुताएल छी तँए बेसी गप-सप्प नइ करब। एकेटा गप बुझि लएह जे केतौ चारि बजे तक आ केतौ तीनियेँ बजे तक भोँट खसत।"

मनमे भेल जे पुछिऐन, एना किए? जइ प्रशासनकेँ सात बजेसँ चारि बजे तक भोँट करबैक शक्ति अछि ओ दू घन्टा आरो किए ने करा सकैए। फेर भेल जे भऽ सकैए ओइ सभ बुथपर भोँटे कम खसैत होइ। अपनो मन कहलक जे अखनसँ जेते भोँट खसत ओते तँ संख्यामे पतराइते जाएत, अन्त-अन्त होइत पतराइये जाएत। आने काज जकाँ लगले भऽ जाएत। आगू बढ़लौं तँ सुधनी दादीकेँ रस्तापर बैसल यत्र-कुत्र गरियबैत देखलिऐन। मनमे भेल जे आइ देशक महापर्वक शुभ दिन छी, तखन अस्सी बर्खक सुधनी दादी किए गारि पढ़ि अपनो अशुभ दिन आ सुननिहारोक अशुभ दिन बना रहली अछि? से नहि तँ पुछिऐ लइ छिऐन। मुदा लगले मनमे भेल रस्तापर छी जँ कहीं तइ बिच्चेमे पुलिसक गाड़ी आबि गेल तँ अनेरे लफड़ामे पड़ि जाएब। मुदा मनमे खुटखुटी पकैड़िये लेलक जे भोरे-भोर सुधनी दादीकेँ की भऽ गेलैन जे एना गरियबै छथिन? आगू तकलौं तँ बीस-पचीस लग्गी हटल रूपनी भौजीकेँ देखलयैन। मन मानि गेल जे रूपनी भौजी लग सभ भाँज लगि जाएत। आगू बढ़ि, रूपनी भौजी लग पहुँचते बजलौं- "भौजी, दादी किए भोरे-भोर बताहि जकाँ रस्तापर बैस गरियबै छथिन?"

'बताहि' सुनि विचारमे विराम दैत रूपनी भौजी बजली- "बौआ, दू हजार रुपैआ लेटरीन बनबैक नाओंपर आ पाँच हजार घरक नाओंपर सिकिया नेता ठकि लेलकै, वएह भोरे नजैर पड़लैन कि गरियौनाइ शुरू केलखिन।"

'सिकिया नेता' बुझबे ने केलौं, ओना गाममे तीनटा सिकिया पहलमानो आ सिकिया खलिफो अछि मुदा सिकिया नेतो अछि से भौजीए मुहेँ सुनलौं। लगले मनमे ईहो भेल जे भरिसक सिक्की-मौनीक कारोबार दुआरे लोक 'सिकिया नेता' कहैत होइ। बजलौं-

"भौजी, के सभ अपना गाममे 'सिकिया नेता' छैथ?"

एक्केबेर नकमाइन करैत भौजी बजली-

"ओइ छौड़ा सभकेँ नइ देखै छिऐ जे मौगी जकाँ झोंटो बढ़ौने अछि आ तैपर सँ मोछो-दाढ़ी सभ दिन कटबैए आ मौगियेक सलवार-जम्फर जकाँ पइज्जमो आ कुरतो पहीरि लइए आ अँगने-अँगने भेल घुरैए।"

भौजीक बात आरो सुनैक मन होइ छल मुदा भोँटक दिन छी, आइयो तँ लोक बुझह जे हमरो गिनती सरकार बनबैमे भइये रहल अछि। बजलौं-

"भौजी, अनेरे ने सुधनी दादी बताहि भेल छैथ। ओ तँ भागमन्त छैथ जे एहनो ठक-फुसियाहक दुनियाँमे अस्सी बर्खक उमेरमे गरियेबो तँ करिते छैथ।"

हमर बात सुनि भौजी मुस्कियेली। मुदा बजली किछु ने।

❑ शब्द संख्या : 1023, तिथि : मजदूर दिवस, 2019

मुँह खुजिते नाक कटि गेल

कनियेँ दिनमे काल्हि झंझारपुरसँ अबैत रही कि बेलाराहीक पारबैर गाछ लग तारानन भेटल। ओ ओइठाम रस-पानीक भाँजमे बैसल रहए। कहब जे 'रस-पानी' की भेल? बुझिते छिऐ जे जखन कोनो वस्तुक बदनामी वा हँसारत हुअ लगै छै तखन ओ अपन नाओं बदैल दोसर सील-मोहर लगा बजारमे टहलए लगैए, तहिना ताड़ी-दारू सेहो अपन बदनामीसँ 'रस-पानी' नाओं रखि लेलक। कहब जे ताड़ी-दारू तँ अपना ऐठामसँ उपैट गेल। जँ उपैट गेल हुअए तँ जुगानुकूल नीके भेल, किए तँ आब लोककेँ ओते छुट्टी छै जे दू-दू-तीन-तीन घन्टा पसीखानामे आकि दारूभट्ठीमे बैस खाइ-पीबैमे लगौत आ तैपर सँ घन्टाक-घन्टा लघी करैमे लगौत। आब तँ बुझले अछि जे पेशाव करैक तेहेन बेवस्था भऽ गेल अछि जे सोल्हन्नी नापेसँ बनल, तैठाम घैला-घैले ताड़ी पीब, घैला-घैले पेशाब करब जुगानुकूल रहल। कहुना भेलौं तँ एकैसमी सदीक ने लोक भेलौं, राहुल भाय जकाँ बाइस्मिक तँ भेलौं नहि।

ताराननक मन खसल बुझि पड़ल। बुझि पड़ल जे वेचाराकेँ पाइ-कौड़ीक लेन-देनमे भरिसक नइ पटि रहल छइ। किए तँ जहिना पछुआएल समाज-ले पछुआएल नियमो-निष्ठा[23] बनैए आ वएह जखन अगुआ जाइए तखन नियमो-निष्ठा तँ अगुआइए जाइत अछि। गाम-घरक लोक ने ताड़ी-दारूक कारोबार छोड़ि देलक मुदा

23 कानून-कायदा

अन्तर्राष्ट्रीय बजार थोड़े छोड़ि देत, ओ तँ तेना धकेल कऽ धकिया धए लेलक अछि जे शास्त्रे-पुराण जकाँ गमैआ दारू आ ताड़ी खिस्सा-पिहानी भऽ गेल। ताराननक पह फटल। एकटा चिन्हरबा भेट गेलइ। तारानन‍क मूड फ्रेश भऽ गेलइ। देहमे फुरती सेहो आबि गेलै, कहलक-

"सुकदेव, दुनू भाँइ पएरे-पएरे साइकिलकेँ गुड़कबैत चलबो करह आ गपो-सप्प करैत चलब।"

अपन-अपन सुआरथे जहिना सभ जीबैए तहिना ने हमहूँ जीबै छी। अपने बुझै छेलौं जे ताराननकेँ निशाँ लागल छै तँए साइकिलसँ खसै-दुआरे पएरे-पएरे चलैले बाजल हेन, मुदा तैयो गाम-घरक समाचार बुझैक लोभ तँ अपनो छेलए-हे।

कनियेँ आगू बढ़लौं कि जेना तारानन‍केँ किछु मोन पड़लै तहिना चौंकैत बाजल-

"सुकदेव! दिनेश भाय गाम एला अछि। सुनै छी आब ओ गामेमे रहता?"

ओना, बुझल बातक अनुकूल आकि बिनु बुझल बातक अनुकूल तारानन बाजल से नइ बुझि पेलौं तँए 'दिनेश भाय' सुनि मनपर जोर दिअ पड़ल। पैंतीस बर्ख पूर्व दिनेश भाय गामक पहिल अर्थशास्त्री भेला, ओहन अर्थशास्त्री जे देशमे सेहो पहिल श्रेणीक छैथ। बच्चेसँ दिनेश भाय कुशाग्र बुइधिक विद्यार्थी। जहिना अपन मातृभाषामे कोनो बात बुझैमे असान होइए तहिना विषयो ओहन अछिए जे मातृभाषे जकाँ मनक अनुकूल भऽ जाइए। जहिना गाम-घरक जीवन दिनेश भाइक तहिना गाम घरक विषयो अर्थशास्त्र छीहे। पी.एच-डी. केलाक पछाइत दिनेश भायकेँ पूनामे नोकरी भेलैन। कौलेजक प्रोफेसर बनला। दू भाँइक भैयारीमे दिनेश भाइक

जेठभाय पहिनहि परिवारक संग दिल्ली चल गेलैन आ अपने दिनेश भाय पछाइत गाम छोड़ला, जेकरा पैंतीस बर्ख भऽ गेल। घर-दुआर ढहि-ढनमना कऽ खसि पड़लैन। बीच गामक बास, तँए घराड़ी धिया-पुताक अगबास बनि गेल छेलैन। गामक जेतेक तौला-कराही फुटै, सभटा लोक ओहीमे फेकए लगल।

बजलौं- “अपने आँखिये तूँ देखलुहुन अछि?”

ताराननक मन जेना तखन फ्रेश भऽ गेल छेलै तहिना बाजल-

“अपना आँखिये तँ नइ देखलयैन, मुदा बिनु देखलो-सुनल तँ सत् होइते छइ।”

बिच्चेमे बजा गेल- “जँ सत् होइ छै तँ झूठो तँ होइते छइ।”

मुदा लगले मनमे उठि गेल जे ताराननक मन अखन फरीच भऽ गेल छै, तँए बेसी गपो-सप्प करब नीक नहि। भऽ सकैए जे ओकातिसँ बाहर किछु बाजि दिअए। संजोग बनल, ताराननकेँ दोसर संगबे भेट गेलइ। ओना, तारानन गौंओं छी आ संगियो छीहे मुदा अनठिया संगीक संग तारानन धऽ लेलक, जखन कि हमहूँ संगियो आ गौंओं छिऐहे। संगी-संगीक संगपनक सम्बन्धमे अन्तर भेने एना होइए। ओना, सम्बन्धो-सम्बन्धमे अन्तर होइते अछि। कोनो सम्बन्ध बाहरियो आ उपरियो होइए आ कोनो सम्बन्ध गहींरगरो आ भीतरबैयो तँ होइते अछि। जँ से नइ होइए तँ लाखो कोस हटल चान केना पोखैर, डबरा, चभच्चा, कोचाढ़ि वा मरल धारक थालमे जनमल कुमुद-कुमुदनीक फूलसँ प्रगाढ सम्बन्ध बना लइए। जेकरा[24] लाखो कोसक रस्ताक सोह थोड़े रहै छै, ओ तँ सोझहे कुमुदनीमे सटि रंग-रभस करए लगैए। यएह तँ छी प्रेमक प्रभाव।

---

[24] चानकेँ

दिनेश भाइक समाचार सुनि मनमे उठल। उठल ई जे समाजमे जन्म नेने एते तँ दायित्व बनिते अछि जे जँ कियो हेराएल-भोथियाएल, बिनु ठौर-ठेकानाक वा अपरिचित अनचिन्हार गामक-समाजमे आबि जाथि तँ हुनक कुशल-छेम बुझब जरूरी अछिए। आ जँ से नइ भेल तँ समाज आ सामाजिकता की भेल। दिनेश भाय अपन जन्मधरतीकेँ छोड़ि भलेँ जेतए गेल होथि मुदा ओ तँ हुनकर सीमाक प्रश्न ने भेल, हमरा ओइसँ कोन मतलब। जहिना सभकेँ अपन-अपन डीह-डाबर, खेत-पथारक सीमा होइए तहिना ने हमरो अपन जीवनक क्रियाक सीमा अछिए। मन मानि गेल जे काल्हि भोरमे दिनेश भाय ऐठाम जा जरूर भेँट करबैन।

दोसर दिन भोरमे जखन ओछाइनपर नीन टुटले छल तखन अपन दिनक कुण्डलीक हिसाब मिलबए लगलौं। सभसँ एक नम्बरमे दिनेश भायसँ भेँट करब रखलौं। ओना, परिवारमे छी, परिवार मायाक जाल छीहे, तेहीमे ने रहितो छी आ रहबोक अछिए, तखन जँ धिया-पुताक झगड़ासँ लऽ कऽ घरक झगड़ा–घरक झगड़ाक माने भेल परिवारकेँ आगू बढ़ैक दिशामे बीचक बाधा–धरिक ठेकान नइ करब तखन अनेरे बेठेकानल रस्ता धियो-पुतोकेँ आ परिवारोक भइये जाएत। परिवारक मायामे रहने अनेको काज सिर धेनहि रहैए मुदा तेकरा सभकेँ पछुआ, चाह पीब दिनेश भाय ऐठाम जेबाक विचार तय करैत मनकेँ मना लेलौं।

तत्काल रहै-जोकर बेवस्था दिनेश भाय बना लेलैन। चापाकलो खूब गहींरगर गड़ा लेलैन। दिनेश भाइक चेहराक इमान रूप स्पष्ट कहि रहल छेलैन जे गिरगीट जकाँ अपन रूपो आ चालियो पकैड़ भलेँ किछु मुँह-मिलानी मुंगबा परैस ली मुदा दुनियाँक ओहन धरती जे अपने सात हाथ तरमे पड़ल अछि, ओ जँ पुछत तँ की जवाब देबै, तँए दिनेश भाइक चेहराक रूप थोड़ेक उदाससँ

उदासीन जकाँ छेलैन्हे। मुदा शहर-बजारमे रहनिहारि स्त्रीगणमे एते गुण तँ आबिये गेल अछि जे दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ लोटा भरि पानिसँ भलेँ स्वागत नइ कऽ पबैथ मुदा पानिसँ भरल शीशा-गिलाससँ स्वागत करैक अभ्यस्त तँ भइये गेल छैथ। जहिना अपने दिनेश भाइक चेहराक सिरखार देखि रहल छेलौं तहिना दिनेशो भाय मने-मन हमरा चिन्हैक कोशिश कइये रहल छला। किएक तँ चिन्हक पछातिये ने सम्बन्ध स्थापित करैत किछु बजता। तैबीच पत्नी टुनी दू गिलास पानि नेने पहुँच गेली। कहब जे 'टुनी' अपना ऐठामक तँ नाओं नहि छी, ठीके नइ छी। असल भेल ई जे पूना जाइसँ पहिने सावित्री नाओंसँ दिनेश भाइक पत्नी जानल जाइ छेली। पूना गेलापर संगी-साथी जे भेटलैन, वएह सभ 'टुनी' नाओं रखि देलकैन। पानि नइ पीलौं, किए तँ नजैर चाह-बिस्कुटपर चलि गेल, तँए पानि छुटि गेल। जखन खाइ-पीबैक ओरियान तक भऽ गेल तखन चुपा-चुपी नीक नहि बुझि बजलौं-

"भाय साहैब, जहिया अपने गाम छोड़लौं तहिया हम हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही। अपनेक बहुत नाम सुनैत रही तँए चेहरा केतबो बदैल गेल मुदा नाओं स्मरण रहने सम्बन्ध ओहिना बरकरार बुझै छी।"

दिनश भायकेँ जेना धाराक अगम पानिमे कोनो डुमैत वा हेलैतकेँ माइटिक सह भेटने मनमे खुशी होइ छै तहिना दिनेश भायकेँ सेहो भेलैन। खुशियाएल दिनेश भाय बजला-

"आइ तीन दिन एना भऽ गेल।"

'तीन दिन' सुनि पुछलयैन-

"तखन तँ केते राउण्ड गाममे लगा चुकल हएब?"

दिनेश भाय बजला- "केते राउण्ड तँ नइ लगा सकलौं, किए

तँ अपने अखन नवबासे ने छी तँए पहिने अपन देखैत ने आगू देखब।”

भाय नजरियाक जहिना एक नजैर देखने तहिना हजार नजैर देखने, बात तँ बरबरिये अछि। बजलौं-

“केहेन गाम बुझि पड़ल?”

बिना किछु लाइग-लपटे दिनेश भाय बजला-

“मुँह खुजिते गामक नाक कटि गेल!”

दिनेश भाइक बातक कोनो अर्थे ने लगल जे की मुँह खुजल आ की नाक कटल। पुछलयैन-

“से की भाय सहैब?”

व्याख्या करैत दिनेश भाय बजला-

“सुकदेव, गामक बीचो-बीच एन.एच.क ऊँचगर सड़क बनने गामक मुँह जरूर खुजल जे देश-दुनियाँक आबा-जाही बढ़ल, एन.एच.सँ जोड़ैले गामे-गामक सड़कक निर्माण सेहो होइए मुदा लोकक बासभूमि आ उपजाऊ जमीनक जे रूप-रंग बनि गेल अछि, जे गामक जिनगीक आधार छी, ओ तँ छत्त-बिछत्त भेबे कएल अछि, से केना सुधरत।”

ओना, दिन-राति अपनो ऑंखिये देखिते छी मुदा अखन तक नजैरपर चढ़बे ने कएल छल, जे चढ़ल। बजलौं-

“भाय साहैब, अखुनका समय माने भोरक उखड़ाहाक काज करैक छी, तँए अखन जाइ छी, साँझू-पहर निचेनसँ आबि आरो गप-सप्प करब।”

दिनेश भाय बजला-

“सुकदेव, जेतइ लोक रहैए तेकरे ने नीक-सँ-नीक आ सुनर-

सँ-सुनर बनबए चाहैए।”

बजलौं-

“ई तँ अपने बिल्कुल साधल बात कहलिऐ। नीक गाम बनत, नीक विचार बनत, जइसँ सभ तरहक कल्याण हएत। तखने ने गाम-समाजक लोक सेहो नीक विचारक मनुक्ख बनि नीक काजक रस्ता धड़त।”

ओना, दिनेश भायकेँ हमर बात सुनैमे नीक लगलैन मुदा बुझैमे कनी फेड़ सेहो भइये गेलैन। फेड़क कारण भेल जे दिनेश भाय अर्थशास्त्री छैथ तँए ओ अपन गाम-समाजक उन्नैत अर्थक रस्तामे देखै छैथ। गामक असीम सम्पदा–वस्तुसँ मानव धरि–बिलैट रहल अछि! मुदा नजैरियोक खेल तँ साधारण नहियेँ अछि। जैठामक समाजक बेकती खेतक पैदावार हो वा खानक, कारखानाक हो कि हाथक, ओ मनुक्ख निर्मित भेल मुदा दोसर बेकती समाजमे ओहन नहि अछि जे बुझबो करैए आ बजबो तँ करिते अछि। जे अपना केने किछु ने होइए, सभ भगवानक खेल छिऐन माने ‘भिखारी सारी दुनियाँ, दाता एक।’

असमंजसमे पड़ल दिनेश भाइक मनमे उठिये रहल छेलैन जे केना लोक अपन बेथा-कथाक वेद पढ़ता...। मुदा बिच्चेमे विस्मित होइत बजला-

“सुकदेव, जखने जागी तखने परात। जहिना तोरा लिए हम हेराएल छेलौं तहिना तोहूँ ने हमरा लिए हेराएले छेलह। आब दुनू गोरे एक गौंआॅ भेलौं, घरुआ बनि केना रहब, ई तँ सभकेँ ने बुझए पड़तह।”

दिनेश भाइक विचारमे अपन विचारकेँ साटि बजलौं-

“किछु भेलिऐ तैयो तँ मनुक्खे ने भेलिऐ, पिकनिक करैले

लोक समुद्रक कात जाइए, पहाड़पर जाइए, हवाइ जहाजपर सेहो जाइए। जाइए तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा अपना सभ समाजोक धारमे एक नावपर बैस पिकनिक नइ मना सकै छी।”

दिनेश भाय बजला-

“भेँट-घाँट होइत रहत।”

❑ शब्द संख्या : 1475, तिथि : 04 मई 2019

जेकरे भर तेकरे डर

तीन दिनक पछाइत मधुबनीसँ गाम आएले रही कि पत्नी बजली-

"उन्नैतलाल काका तीन दिनसँ ओछाइन पकड़ने छैथ.!"

अपनो ओछाइनिक बात बुझले अछि जे एक दिन बीमारीक नाओंपर कहुना निकैल जाइए मुदा दोसर दिनसँ प्राण अवग्रहमे पड़िये जाइए जे मरब कि जीयब। तैठाम उन्नैतलाल काकाकेँ तेसर दिन पूर होइले जा रहल छैन। हुनकर प्राण तँ आरो अवग्रहमे तर-ऊपर होइते हेतैन जे छी कि नइ छी, दुनियोंमे आब रहब कि नइ रहब...। ओना, अपनो तीन दिनक मधुबनीक दौड़-बरहा नीक जकाँ थका ठेहिया देलक तँए आराम करैक इच्छा मनमे अछिए। देहमे कोनो लज्जैतीए ने बुझि पड़ैए। बुझि पड़ैए जे खण्ड-खण्ड देह टुटि रहल अछि।

एक दिस उन्नैतलाल काकाकेँ ओछाइन धड़ब, दोसर दिस अपने ओछाइन पकड़ब, दुनू विचार मनमे नाचए लगल जे की करब नीक हएत। मनमे करवनो हुअए जे जखन तीन दिनसँ उन्नैतलाल काका ओछाइन पकड़ने छैथ तँ दू-चारि घन्टा आराम केलाक पछाइत जँ भेँट करए जाएब तँ की हेतइ। मुदा लगले फेर ईहो हुअए जे देहक कोनो ठेकान अछि, जँ बिच्चेमे मरि जेता तखन कक्काक अन्तिम विचारक बात थोड़े सुनि पएब...। अगदिगमे मोन पड़ले रहए कि संजोग बनल, पत्नी एक लोटा पानि आ एक गिलास

चाह अनलैन। पानि पीला पछाइत मन कनी खनहन भेल। चाह पीबए लगलौं। चाह पीबैत-पीबैत सोल्होअना तँ नहि, मुदा थोड़ेक बेसियाइत आरो मन हल्लुक भेबे कएल। पत्नीकेँ कहलयैन-

"सुनू, पहिने उन्नैतलाल काकासँ भेँट कऽ अबै छी पछाइत अपन क्रिया-कर्म करब।"

ओना, पत्नीक मनमे रहैन जे पहिने अपने क्रिया-कर्म सम्पन्न करि ली पछाइत उन्नैतलाल काकासँ भेँट करए जाइ, मुदा मनमे दोसर की विचार उठैत रहैन से तँ किछु बजली नहि। गुमसुम भेल पत्नीकेँ देखि बजलौं-

"उन्नैतलाल काका-ऐठामसँ भेल अबै छी।"

चाह पीला पछाइत उन्नैतलाल काका-ऐठाम विदा भेलौं। दरबज्जाक ओसारपर खड़ौआ जौड़बला खाटपर पड़ल उन्नैतलाल काका चद्दैरसँ मुँह झँपने पड़ल छला। लगमे जखन गेलौं आ साँस दिस नजैर बढ़ेलौं कि मुँहक आवाजक पट-पटी बुझि पड़ल। उन्नैतलाल काका जीवित छैथ एते बिसवास तँ बनियेँ गेल, मुदा फेर भेल जे मिझाइ बेरमे जहिना डिबिया-लालटेनमे जोरसँ भकइजोत होइए तहिना ते ने उन्नैतलालो काकाकेँ भऽ रहलैन अछि। जँ से भेल तखन तँ अपन सभ केलहा-धेलहा चलि जाएत। मुँहक अन्तिम विचार उन्नैतलाल कक्काक नहियेँ सुनि पएब। कोनो असथिर विचार मनमे आबिये ने रहल छल जे आगू किछु करी।

दोहरा कऽ फेर ओइ पटपटी, माने उन्नैतलाल कक्काक मुँहक पट-पटीकेँ अख्यिासैक विचार भेल। कानकेँ एकबाहि करैत धियान दौड़ेलौं तँ बुझि पड़ल जे उन्नैतलाल काका किछु बाजि रहला अछि। अख्यिासए लगलौं जे सपनामे बाजि रहला अछि आकि अपन सोग-पीड़ा जागलमे बाजि रहला अछि। मुदा से बुझब केना? तइ

बुझैले पहिने उन्नैतलाल काका जागल छैथ आकि सुतल, पहिने तँ से बुझए पड़त। मुदा मुँह झाँपल रहने से बुझब केना? तइले तँ अपनो ने किछु करए पड़त। मुदा करब की, मनकेँ दबलौं। दबिते भक्-दे मनमे इजोत भेल। इजोत ई भेल जे स्त्रीगण सभ ओंगरी पटपटा माने ऑंगुरक गिरहकेँ फोरि जहिना पुरुखक कनसोह लइ छैथ तहिना अपनो ऑंगुरकेँ ऑंगुरेसँ दाबि पटपटबैक मन बनेलौं। एते मनमे विचारिते रही कि उन्नैतलाल कक्काक मुहसँ निकललैन-

"जेकरे भर तेकरे डर! अराजक..!"

उन्नैतलाल कक्काक मुँहक शब्दक कोनो अरथे ने लगल, अरथो केना लगैत? दुनियाँक संग जे आशा बनल अछि ओ जँ निराशामे बदैल जाए, तखन तँ...। मुदा संजोग बनल, उन्नैतलाल काकाकेँ अपने खोंखी उठलैन। मुँह उघाइर खोंखी करए लगला कि नजैर मिलते बजलौं-

"गोड़ लगै छी काका..!"

जेना उन्नैतलाल काकाकेँ बजैक बेग आबि गेल रहैन तहिना बिना असीरवाद देनहि, माने अपन ओछाइनक जिनगी बातकेँ छोड़ैत बजला-

"बौआ हरी, जेकरे भर छल सएह डेरौन लगैए..!"

अपना बुझि पड़ल जे भरिसक उन्नैतलाल काका सठिया रहल छैथ, माने साठिक जिनगीमे चलि एने दुनियाँसँ मन टुटि रहल छैन तँए भरिसक एना बाजि रहला अछि। मुदा बिनु बुझने किछु निर्णयो केनाइ बचकानीए ने हएत। तखन? तखन यएह ने जे उन्नैतलाले कक्काक मुहसँ सुनब नीक हएत। पुछलयैन-

"से की काका?"

बोलीक टाँससँ मन मानि गेल जे भरिसक उन्नैतलाल काका

किछु सोचै-विचारैले खिसिया कऽ खाट पकैड़ नेने छैथ। उन्नैतलाल काका बजला-

"बौआ हरी, की कहबह आ केते कहबह! एक्के बेर बुझि जाहक जे घर-सँ-बहार धरि अराजक स्थिति बनल जा रहल अछि। अपनो जइ भरे जीबए चाहै छेलौं सएह डेरौन लगैए।"

मधुबनीसँ थाकल आएल रही तँए अपनो मन जड़कैत रहबे करए, मुदा तैयो मनमे एते खुशी आबिये गेल जे जेना सुनने रही जे उन्नैतलाल कक्काक मुँहक अन्तिम बात सुनि सकब की नहि, से बात नहि। मुदा जेना उन्नैतलाल काका अपन विचार शुरू केलैन तेना जँ बीचमे कहि दिऐन जे 'काका अपनो मन जड़कल अछि तँए आन दिन आरो विचार सुनब।' सेहो नीक नहि बुझि पड़ल। ओना तैयो अपन मन अनइच्छित भइये रहल छल। किएक तँ कोनो काजक आकि कोनो विचारक दुनू अवस्था होइए, इच्छितो आ अनइच्छितो। इच्छित भेल ओहन काज/विचार जेकरा करबोक आ सुनबोक अपन प्रवलित इच्छा हुअए आ दोसर भेल जे नइ हुअए। मुदा तइ बिच्चोमे एकटा नमहर देवालो तँ ठाढ़ अछिए। जे जहिना एकसँ लऽ कऽ सौ तकक बीच सौ संख्या अछि आ ओइ सौ संख्याक बीच दुनू पक्ष अछि तहिना 'सौ'क बीच सेहो नमहर देवाल अछि। माने ई जे केते इच्छा काजो आ विचारो सुनै-करैक अछियो आ नहियोँ अछि। जँ बेसी (प्रतिशतक हिसाबसँ) करैक अछि आ कम नइ करैक अछि ओइठाम करैले सामंजसक अनुकूल मौसम भेल मुदा जैठाम बेसी नइ करैक वा सुनैक रहल तैठाम प्रतिकूल मौसमक वातावरण बनैक सम्भावना भइये जाइए। मुदा जे जेतए हुअए, अपना मनमे अखनो ई विचार अछिए जे पहिने उन्नैतलाल कक्काक अन्तिम बात जरूर सुनब। तँए मन मानिते छल, मुदा देहक बदमाशी सेहो देहमे चलिये रहल छल। बजलौं- "से की काका?"

जहिना धार आकि पोखैरमे गाए वा घोड़ाकेँ नहेबाकाल ठेहुन भरि पानिमे हाथसँ छोड़ छुटि गेने रमकैत या तँ घरमुहाँ पड़ाइए नहि तँ अगम पानिक मुहेँ रमकैए, तहिना ने जीवनो छी। कियो जीवनक डरसँ पड़ाइए तँ कियो जीवनकेँ जीवन बुझि जीबैए। उन्नैतलाल कक्काक रमकी घर दिसक नइ उठि अपन मनसँ सटल विचारसँ लऽ कऽ दुनियाँक विराट मनक विचार दिसक उठि गेलैन। बजला-

"बौआ, तोरा देखै छिअ जे थाकल चुरम-चुर भेल देहक संग मनो छह, मुदा अपना मनमे अछि जे जिनगीक कोनो ठेकान नहि, तँए अपन अन्तिम बात तोरा कहि सुना दिअ।"

उन्नैतलाल काका तेना ब्रह्मफाँसमे ओझरा देलैन जे ने 'हँ' कहैत बनै छल आ ने 'नइ' कहैत। शंका हुअ लगल जे जँ कहीं अगम पानि दिस भँसियबैत काका अथाह पानिमे गरगोटिया दैत किछु बजेता ओ तँ बाजए पड़त, नइ तँ अपटी खेतमे खपटी बनि फेका कऽ झुटका बनि-बनि लतिमरदनमे पड़ब...। आगूक कोनो गर नइ देखि पैघक प्रति जेहेन निवेदन होइए तहिना बजलौं-

"काका, अपने सबहक जे अमृतवाणी अछि ओकरा जँ अमृत रूप मानल जाए, तखन ओ..!"

जहिना जेठ मासक पछबा-हवाक लपकीमे कोसक-कोस भरि आगि लपैक पकड़ैए तहिना हमर बातकेँ लपैक उन्नैतलाल काका पकैड़ लेलैन। पकैड़ते बजला-

"बौआ, तोरा देखै छिअह जे मन कछमछाइ छह आ अपनो अपना लगसँ परिवार-गाम होइत देश-दुनियाँ दिस जखन देखै छी तँ सौंसे अराजक स्थिति बनल बुझि पड़ैए। जइसँ जइ भरे जीबए चाहै छेलौं सएह डेरौन लगि रहल अछि।"

उन्नैतलाल काका अपना विचारे ने बजला मुदा अपन विचार

ओइमे केते मिलैए आ केते नइ मिलैए ई विचारणीय विचार तँ अछिए। तँए चुपे रहब नीक बुझलौं। मुदा मुड़ी जरूर घुमेलौं। मुड़ी घुमबैक माने उन्नैतलाल काकाकेँ की लगलैन से तँ ओ जानैथ मुदा एते जरूर बजला-

"बौआ! दुनियाँदारीक बात छोड़ह, अपने परिवारमे देखै छी जे अपन अरजल पाँच बीघा खेत अछि जइमे अपन जिनगी बनेलौं! मुदा... ।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"एकरा के काटत।"

उन्नैतलाल काकाकेँ जेना आरो सह भेटलैन तहिना बमकैत बजला-

"देखिते छहक जे एकटा बेटा अछि, ओहो अपन बाप-दादाक अर्जित सम्पैत–धनसँ धरम धरि–केँ छोड़ि, कारखानामे नोकरी करए चलि गेल। बीच धारमे अपने खसि रहल छी..!"

उन्नैतलाल काकाकेँ हूबा दैत बजलौं-

"काका, सबै नचाबै राम गोसाँई... ।"

❑ शब्द संख्या : 1214, तिथि : 06 मई 2019

ललियाएल चेहरा करियाएल मन

चुनाव बीतल, जान हल्लुक भेल। तीन माससँ अपन रूटिंग सोल्होअना गड़बड़ाएल रहल जइसँ की करै छी आ की नइ करै छी से विचारे मनसँ निरमूल भऽ गेल..! खाएर जे भेल मुदा चुनाव बितने जान तँ हल्लुक भेबे कएल। पैछला तीन मासक काज[25]कें रस्तापर आनैक विचारसँ बाध दिस विदा भेलौं। किसान छी, किसानी जीवन अछिए। बेरुका समय, सुर्ज उतारपर आबि चुकल छल, पुरबा हवाक लहकी सेहो अपना गतिये चलिये रहल छल जइसँ मौसमक सुहाव बदैल सुहावना बनियेँ गेल छल। टोलसँ, माने बस्तीसँ निकलबे केलौं कि आगू दिससँ माने विपरीत दिशासँ, रूपलालकेँ अबैत देखलौं। रस्ता-कातक आमक गाछक निच्चाँमे ई सोचि अँटैक गेलौं जे बहुत दिनक पछाइत रूपलाल नजैरिक सोझ पड़ल, तँए किछु गप-सप्प करब।

रूपलाल हाइ स्कूल तकक संगी रहि चुकल अछि। ओना, राजनीति-मंचक लोक रूपलाल बनि गेल अछि तँए राजनीतिक खेलाड़ तँ अछिए, भलेँ केहेन खेल खेलेनिहार अछि ई दिगर बात भेल। ..आगूए-सँ रूपलाल बाजल-

“गोबरधन भाय! की हाल-चाल?”

आगू भऽ कऽ जखन रूपलाल ‘भाय’ कहि बाजल तखन तँ अपनो फर्ज भइये जाइए जे भाइक उत्तर भाइक सम्बोधनसँ दिऐ।

---

[25] जिनगीक क्रियागत धार

कहब जे जेठ-छोटक जँ प्रश्न हुअए? ..ऐठाम तँ बुझले अछि जे रूपलाल हाइ स्कूल तकक संगी छी, जेकर माने भेल बच्चासँ किशोर-वय धरिक। ओना, दुनू गोरेक बीच अखन तकक जे गप-सप्पक क्रम रहल, ओइमे भाइक प्रयोग नइ होइ छल। जहिना हम 'रूपलाल' कहै छेलिऐ तहिना ओहो 'गोबरधन' कहिते आबि रहल छल। बजलौं-

"रूपलाल भाय, हमरा सबहक हाल-चाल तँ भगवानक हाथ छैन, अपना हाथमे अछिए की जे किछु रहत।"

जेना हमर बात रूपलाल सुनबे ने केलक आकि सुनि कऽ अनठा देलक से अपने जानत, मुदा मुस्की दैत बाजल-

"चुनावक की हाल-चाल रहल, भाय?"

बजलौं-

"चुनावक हाल-चाल तँ अहाँ सबहक हाथमे अछि, हमरा ई पुछू जे चाह-पानमे केते खर्च भेल आ केते दिनक काज मारल गेल।"

शिकारी रूपलाल बनियेँ गेल अछि, बाजल-

"भाय, अहाँ जे बात कहै छी ओ नियमानुकूले कहै छी। तीन मास पहिने जे अचारसंहिता लगैए से अही दुआरे ने जे तीन मासक जीवन सबहक बदलत। केतबो कियो काहिल कि जाहिल आकि माहिले किए ने हुअए, मुदा ओहो सभ अपन चालि नियमानुकूल बनाइये लइए किने। तहिना ने अहूँकेँ भेल, जे उचिते ने भेल।"

रूपलालक मुहसँ 'उचित' सुनि अपन मनक उचितलाल जगि गेल। जगिते तीस साल पूर्वक किशोर-वय-रूपलालपर नजैर पहुँचल। गाममे एकटा गहवर ओहिना अछि जहिना आन-आन देवी-देवताक स्थान अछि। गामक गहवरक भगतक बेटा रूपलाल।

भगत बनब बेजाए काज तँ नहियेँ छी, प्रहलाद-ध्रुव सन-सन भक्त ऐ धरतीपर भेले छैथ। जबे रूपलाल हाइ स्कूलमे पढ़ै छल तबेसँ भगत पिताक डलबाह बनि गेल छल। रोगीक लेल जहिना अस्पतालक संग डॉक्टर तहिना गहवरो[26] तँ चलिये आबि रहल छल। संयोग बनल 1987 इस्वीमे तेहेन बाढ़ि आएल जे गामक भीतघरे उपैट गेल। भलेँ ओही उपटानक फल ईंटेघर किए ने आएल हुअए। ओही भीतघरक संग रूपलालोक गहवर खसि पड़ल। गहवर तँ खसि पड़ल मुदा रूपलालक पुनर्जन्म भऽ गेल। बाढ़िक सरकारी सहायताक अगुआ बनि रूपलाल नेता बनि गेल।

गहवरिया लोक रूपलाल बनियेँ गेल छल। शास्त्र-पुराणक खिस्सा-पीहानी पितेसँ सीख लेलक। तैसंग रामायण आ महाभारतक तँ आधासँ बेसी दोहा ठोरेपर नचैत रहै छै, तँए नीक वक्ता सेहो बनियेँ गेल अछि। ओना, नीक वक्ता बनैक दोसरो कारण रूपलालकेँ भेल। ओ भेल जे देश कहियौ कि राज्य, एक्कोटा राजनीतिक दल शेष नहि बँचल अछि जइ दलक सदस्य रूपलाल अपन तीस बर्खक जीवन[27]मे नइ भेल हुअए। ओना, एक पार्टीसँ दोसर पार्टीमे प्रवेश करैक रस्ता सेहो रूपलालक दुनू अछि। अपनो (माने रूपलाल) जहिया कहियो कोनो पार्टीमे कोषाध्यक्ष पदसँ हटौल गेल, तहिया या तँ दोसर पार्टी बना कोषाध्यक्ष बनि गेल, नहि तँ कोनो दोसर पार्टीसँ कोषाध्यक्षक प्रलोभन भेटलापर चलि गेल। जहिना सभ पार्टीक तड़ी-घटी रूपलाल जनैए तहिना सभ पार्टियो रूपलालकेँ जनिते अछि।

ओना, तीस बर्खसँ रूपलाल राजनीतिमे सक्रिय अछि, मुदा

---

[26] जइमे देवता खेलैक रूप रहैए

[27] राजनीतिक जीवन

अखन तक ने कोनो पार्टीक लिखित सदस्ये बनल आ ने लिखित शास्त्रक विचारधारेसँ प्रभावित भेल। एक तँ गमैया लोक रूपलाल, तहूमे गहवरिया परिवारमे जन्म भेने, सभ दिन डाली-पातीक चढ़ौआ जीवन बनले रहलै। आब तँ सहजे पटना तकक कार्यक्रममे जाइये रहल अछि। रूपलालक मुहसँ 'उचित' सुनि मन अगिया गेल। अगियेबो केना ने करैत! जे अनकर उचित अनुचितक विचार करत ओ पहिने अपनो ने करत...। अगियाइते मनमे भेल जे कहिऐ 'रूपलाल! की उचित आ की अनुचित' ई रंगभूमि तय करैए, केकरो मुहसँ नइ खसैए।' मुदा फेर लगले मनमे भेल जे एक तँ ओहिना तीन मासक पैछला समय 'हो-हा'मे चलि गेल आ लगले जँ फेर कोनो आफद बेसहा जाय, सेहो केहेन हएत।

विचारैक क्रममे मन थकथका गेल जे अनेरे बिना लाभ देखने जँ किछु बजै छी, तँ ओहो ओहने पोखरिक असथिर पानिमे झुटका फेकब जकाँ हएत, जे पानिक ऊपरे-ऊपरे ओत्तै जा कऽ असथिर भऽ डुमैए जेतए तक छिछलैक/चलैक शक्ति आ परिस्थिति रहै छइ। मुदा लगले मनक पाशा बदलल। बदैलते मनमे बिचैर उठल जे जीवन समैयक संग चलैत केतौ आगूओ बढ़ि जाइए आ केतौ पछुआइतो तँ अछिए।

ओना, समैयक संग चलला पछातियो समय-समैयक अपन महत् सेहो होइते छइ। जेकरा सुअवसरो कहि सकै छिऐ आ सुसमय सेहो कहल जाइए। एक तँ ओहिना तीन मासक चुनावी महापर्वक रमझौआ सुनि कान सेहो भरिये गेल छल, जे मनोमे घुरियाइते अछि, तैसंग अवसरो भेटल। अवसरक माने ई जे जहिना रूपलाल असगरे अछि तहिना अपनो असगरे छी, तँए बराबरे भेलौं, तैसंग दिनो छोट भेल जाइए आ साँझक अन्हार सेहो लगिचियाएल अबिते अछि। हँ, असगर-असगरक माने देहक बल प्रयोग करबक

खियाल नहि, असगरक माने ई जे जहिना कोनो बात वा विचार, से भलेँ विवादिये किए ने हुअए, मुदा ओ असगरमे भेने कोर्ट-कचहरीक मुद्दा थोड़े गवाहीक अभावमे हएत। जँ किछु नरम-गरम बातो-विचार हएत तँ दुइये गोरेक बीच ने हएत। तेसर थोड़े सुनत जे नीक कि बेजाए कहत। अपना-अपना मने सभ नीके बातो बजैए आ काजो तँ नीके-ले नीक बुझि करिते अछि।

असथिरेसँ बजलौं-

“रूपलाल भाय! रूपमे की रूप अछि, अरूप अछि कि सरूप अछि, कुरुप अछि आकि सुरूप अछि से लोक ऊपरे-झापड़े थोड़े बुझैए।”

ओना, चटसारपर रहैबला रूपलाल, घट्ठा-पिट्ठासँ जहिना देह तहिना मनो सरड़ भइये गेल छै, तँए मनमे जेहेन हमर विचार घाओ केने होइ मुदा लाली भरैत मुहसँ बाजल-

“गोबर भाय, ऐबेर धर्मयुद्ध भेल।”

रूपलालक मुहसँ ‘धर्मयुद्ध’ भेल सुनि मन थकथकाएल। थकथकाएल ई जे धर्मयुद्ध की भेल! केकरा-केकरा बीच भेल? धर्मक तँ एकबटिया दिशा छै जइमे लोक एकमुहरी जाइए, तैबीच ऍंड़ी-दौड़ी भलेँ लगै मुदा सोझा-सोझी ‘युद्ध’ केना हएत? ओना, ई बात चुनावी दौड़मे सुननहि छेलौं जे ऐबेर गमैयो नेता सभ उठि-बैसल। आब कि कोनो बीसमी सदीक भोँट रहल जे टुटलाहा साइकिल आ बसहा कागजपर लोक पर्चा छपा प्रचार करत। आबक तँ एकैसमी सदीक मोबाइल-युगी भोँट छी, जे खाते-खाता पहुँच रहल अछि। बजलौं-

“की धर्मयुद्ध रूपलाल?”

रूपलाल बाजल- “जेते राक्षसी वृत्तिक लोक अछि ओ एक

दिस भऽ गेल आ जेते दैवी वृत्तिक लोक छैथ ओ सभ दोसर दिस भऽ गेला।”

ओना, ई बात बुझल छल जे चुनावक जखन हवा उठलै तखन खेलाड़िये सभ जकाँ रूपलाल सेहो अपन दाम-छाप कइये नेने छल। नीक कमाइ भेबे केलइ। बजलौं-

“रूपलाल भाय, दैवी आ राक्षसी लड़ाइ त्रेता, द्वापर जुगक कथा भेल, अखुनका कहह जे समय-साल उपजगर भेलह किने?”

भाय! सभ तँ जनिते छी जे एकान्तमे पत्नीक संग कोन गप करै छी, से कहैमे एक्को पाइ लोककेँ हिचक नइ होइ छै मुदा रुपैआ-पैसाक जैठाम बात रहै छै तैठाम अनेरे सबहक कण्ठ घड़घड़ाए लगै छइ। रूपलालक वाणीक स्वरमे घड़घड़ाहट आबए लगल, करियाएल मनकेँ दबैत ललियाइत चेहरा बनबैत रूपलाल बाजल-

“गोबरधन भाय..!”

बजलौं-

“तीन मासक पछाइत बाध दिस विदा भेलौं अछि, दिन सेहो खसल जाइए, तोँहूँ कोनो काजे हेबह तँए अखन तोँहूँ जाह आ हमहूँ जाइ छी।”

❑ शब्द संख्या : 1194, तिथि : 09 मई 2019

Notes